

जनक आ' अन्यान्य एकांकी



डा० उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

जनक आ' अन्य एकांकी

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड

१६२/ए/१३२; लेक गार्डेंस,

कलकत्ता-७०० ०४५

● प्रथम संस्करण : १९७८ ई०

● रचनाकाल : २ जून, १९७५ ई०

● प्रकाशक :

मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड

१६२/ए/१३२, लेक गार्डेंस,

कलकत्ता-७०० ०४५

● स्वत्वाधिकार :

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

● मुद्रक :

सिंह प्रेस

कलकत्ता-७०० ०४५

● मूल्य :

तीन টাকা

पात्र-परिचय

जनक—मध्यवयस्क श्रमिक, सम्प्रति बेकार ।

कमला—जनक क पत्नी ।

कार्तिक—जनक क पुत्र ।

शान्तिनाथ—मकान-मालिक ।

रामू—जनक क गौँआ ।

श्रीकान्त—रामू क परिचित व्यक्ति ।

नवीन—जनक क पड़ोसी क बालक ।

आलोक-व्यवस्था

(क) पहिल दृश्य—भोर क पहर; समय प्रातः ६; चारु कात सामान क भीड़ क कारणे अपर्याप्त आलोक; त्रिरश्मिपात [थ्री स्कीम लाइटिंग]—एक खिड़की सँ तीव्र सूर्यालोक टांगल कपड़ा-लत्ता केँ जेना भेद कए लखा होइत अछि; दोसर, मंचक बाम दिसि भानस करबाक स्थान पर अपर्याप्त आलोक; तेसर, प्रवेश-पथ आ तकर आसपास उज्ज्वल आलोक ।

(ख) दोसर दृश्य—बेरिया क पहर; कपड़ा लत्ता चपतबाक बादो आलोक पर्याप्त नहि बुझाईत अछि; द्विरश्मिपात [टू स्कीम लाइटिंग]—एक, खिड़की सँ आवैत अस्तंगत सूर्य क आभास; दोसर, घर क साधारण आलोक ।

(ग) तेसर दृश्य—भोर; घटनाकाल ६ बजे सँ ७ बजे धरि; दृश्य क अधिकांश समय मे केवल एकहिटा आलोक-स्रोत [लाइटिंग सोर्स] रहैत अछि, जे समय क संग तीव्रतर होइत अछि—ओ भेल खिड़की सँ आवैत सूर्यालोक । अन्त मे ई आलोक भग्नहृदय जनक क पाछा सँ जरैत-मिम्बैत [ऑफ-ऑन] होइत रहैत अछि; एहि समय मे एक घूर्णायमान आलोक क व्यवहार सेहो हैत ।

पहिल दृश्य

[एक निम्नमध्यवित्त व्यक्ति क उजड़ल सन घर मे एकटा खटिया, ताहि पर एकटा बिछौना, दूटा अधटुट्टा कुर्सी, एकटा स्टोव, किछु बर्तन आ' भानस क सामान रखबाक एकटा छोट ताखा देखल जाइत अछि । खटियाक ऊपर द' कए एकटा रस्सी टांगल गेल अछि, जाहि पर सँ अधसूखल साड़ी, साया, कुर्ता, धोती, गंजी आ' गमछा लटकैत अछि । भानस क ताखा, स्टोव, बर्तन आदि मंचक बाम दिसि रहत— दहिना दिसि दूटा टंगटुट्टा कुर्सी ।]

मंच आलोकित भेलाक बाद एकटा मध्यवयस्क नारी स्टोव पर अधहन चढ़बैत देखल जाइत छथि । अधहन चढ़ा कए ओ किछु काल दुनू हाथ दू दिसि फैला कए पिढिया पर बैसल रहैत छथि । तकर बाद ताखा पर सँ चश्मा आ' हनुमान चालीसा उतारि कए पुनः पिढिया पर बैसैत हनुमान चालीसा पढ़ै लागैत छथि ।

किछु कालक बाद रस्सी पर टांगल धोती आ' साड़ी केँ पर्वा जकाँ हूँटा कए गृहस्वामी खटिया पर सँ उतरलाह । हुनक आँखि मे तखनहुँ निम्नक चेन्ह लागल रहैत छन्हि । ओ चश्मा केँ कुर्ता सँ साफ करैत आगाँ बढ़ैत छथि ।]

जनक—की भोरे-भोर बड़बड़ाइ छी ?

कमला—[उत्तर नहि दैत छथि । एक बेरी जनक क दिसि देखि कए पुनः
और जोर सँ हनुमान चालीसा पढ़ै लागैत छथि—]

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।

विकट रूप धरि लंक जरावा ॥

भीम रूप धरि असुर संहारे ।

रामचन्द्र के काज संहारे ॥...

जनक—[कल जोड़ैत] हे, बस करू । जहिना पढ़ैत छलहुँ, तहिना पढ़ू...!

[जनक क अनुरोध सुनि कमला पुनः स्वर कें मद्धिम क' दैत छथि । एहि बीच जनक हुनक पास आबि कए दू-एकटा बर्तन क भँपना हँटाए की सब भानस भेल अछि, से देखैत छथि स्तोत्र पर चढ़ाओल हँडिया कें छूबितहि हाथ पाकैत छनिह आ' ओ शीघ्रता सँ हाथ हँटाए मुँह कें विकृत करैत छथि । घर सँ बाहर जा कए कुल्ला क' कए घुरैत एकटा साड़ी मे मुँह पोछैत छथि । तकर बाद एकटा टुटलका कुर्सी कें टेबैत बहुत सावधानी सँ बैसि कए कैकटा पुरान पत्रिका क पन्ना उनटावै लागैत छथि ।

कमला हनुमान चालीसा क पाठ समाप्त कए हँडिया क भँपना हँटा कए देखैत छथि— अधहन खोलि रहल अछि वा नहि । तकर बाद उठि कए जनक क पास जा कए ठाढ़ भ' जाइत छथि ।]

कमला—सुनैत छी ?

जनक—[पत्रिका सबटा कें दोसर कुर्सी पर धरैत] की सुनब ?

कमला—और कत्तेक दिन अहिना चलत ?

जनक—माने ?

कमला—एक हप्ता भ' गेल अछि, तरकारी क मुँहो नहि देखलियैक । बस, दालिये-भात चलि रहलैक अछि ।

जनक—आब दिनका तरकारी चाहियन्हि ?

कमला—हमरा लेल नहि; अहीं क लेल कहैत छलहुँ ।

जनक—हमरा से सब किछु नहि चाही ।

कमला—[चुप रहि कए] एना चाओरो-दालि कत्तेक दिन रहत ? सेहो त आब...!

जनक—[उत्तेजित भए] त ई सब हमरा कियैक सुना रहल छी ?

[कमला जवाब नहि दैत छथि । दुनू किछु काल चुप रहैत छथि ।]

हम की करब एसगर ? झूठों हमरा कारखाना सँ छाँटि देलक । हड़ताल-घेराब कैलक आन क्यो आ' सबटा दोष थोपल गेल हमरे माथ पर ।

[कमला किछु बिना कहनहि स्टोव लग जा कए हँडिया मे चाओर ढारि दैत छथि । तावत जनक अशान्त भए पदचारणा करै लागैत छथि ।]

अहाँ की घूमैत छी, हम कोसिस नहि करै छी ? भोरे निकलैत छी, से सौंभुक पहर हारल-थाकल घुरैत छी । एक बेरि जकरा बदनाम क' कए कोनो मिल-मालिक भगा दैत अछि, तकरा लेल आस-पासक मिल सब मे नौकरी भेटब असम्भवे होइत छैक ।

कमला—अहीं क संग त गोपाल केँ सेहो नौकरी छोड़ै पड़ल छलैक । ओ धैलक कोनो काम-काज की...?

जनक—काज के दैतैक ? सब ठाम त वैह यूनियन आ' पार्टीबाजी चलि रहल अछि । आइ हमहूँ ओकरा सभक संग तोड़फोड़ करितहुँ, बात-बात पर हल्ला करितहुँ— त मालिक हमरा भगा सकितथि थोड़वे ? ने यूनियने-बला सब एना मुँह फेरने रहितै । ओकरा सब केँ हम नीक जकाँ चीन्हि गेलियैक । नारा लगबैत काल ओसब कहैत अछि— 'दुनियाक मजदूर एक हो !' लेकिन भीतरे भीतर 'ओकरा मार ! ओ बिहारी थिकौ', 'एकरा भगा ! ई मद्रासी थिकौ'— इयैह सब कहैत रहैत अछि ।

कमला—जाय दियह से सब बात !

जनक—जाय कोना दियह ? की ई देश हमर नहि थीक ? की माटि पर जातिक नाम लिखल रहैत छैक ?

कमला—एखने ओत्तेक निराश नहि होउ ! [आपन हाथक एकमात्र सोना क कंगन केँ देखा कए] ई त अछिये ।

जनक—आइ अछि, काल्हि नहि रहत । तकर बाद ? [चुप रहि कए] आ' तकर बादे कियैक ? तकर पहिनहि जे हैबाक अछि, से भ' जायत.....

कमला—[शंकित भए] की हैत ?

जनक—मकान-मालिक की कहने रहैक, मोन नहि अछि ? आइ चारि मास भ' गेल अछि हुनकर...

शान्तिनाथ—[नेपथ्य सँ] जनक बाबू छी ओ ?

जनक—बैह, आवि गेलाह ।

कमला—आब ? आब की हैत ? एत्तेक दिन त दुपहरिये केँ आबैत छलाह, जखन अहाँ रहैत नहि छलहुँ । मुदा आइ त...

शान्तिनाथ—[नेपथ्य सँ] जनक बाबू !!

जनक—जे हैत, से देखल जायत । [उच्चस्वरे] के छी ? शान्तिनाथ बाबू ? आयल जाय...

शान्तिनाथ—[प्रविष्ट भए] आइ बड़ भाग्य सँ अहाँ भेंटलहुँ ।

जनक—नहि, माने... हम त.....

शान्तिनाथ—‘हम त’ की ? अहाँ त जनके चौधरी छी ।

जनक—नहि... माने हँ— से त छी ।

शान्तिनाथ—सुनू जनक बाबू ! अहाँ केँ नीक लोग जानि हम घर किराया पर देने छलहुँ । मुदा अहाँ त मैथिल भ' कए मैथिलेक पाइ मारै चाहैत छी । अही लेल बंगलिया मकान मालिक सब कहने छल— कहियो आपन देशक लोग केँ घर भाड़ा नहि दहक ।

जनक—ह-हम त अहाँ केँ कहनहि छी जे...

शान्तिनाथ—...कहने त छी अहाँ बहुत किछु । पहिल मासक भाड़ा जखन नहि देलहुँ, तखन कहने छलहुँ दरमाहा नहि भेंटल । तकर बाद अहाँ क टाका पाकिटमार भ' गेल । दोसर मास मे कहलहुँ नौकरी चलि गेल ।

तेसर मास मे कहलहुँ आपन वेटा केँ लिखने छी टाका लेल, मनीआर्डर आवितहि हैतैक ।

जनक—केवल एहि बेर क लेल अहाँ हमर बात पर विश्वास करू— हम दोसर नौकरी पावितहि सबटा पाइ चुका देब ।

शान्तिनाथ—[जोर-जोर सँ हँसै लागैत छथि] खूब कहलहुँ । अधहन लेल हँडिया चढ़ा कए चललहुँ बीया रोपै लेल ।

जनक—हम स-सत्ते कहैत छी... नौकरी भेंटितहि हम—

शान्तिनाथ—...सबटा पैसा चुका देब । सैह ने ? मुदा ई त अहाँ एमहर कैक मास मे उन्नैस बेर कहि चुकल छी । ई बीसम बेर भेल ।

जनक—श-शान्ति नाथ बाबू ! देखू...

शान्तिनाथ—से त देखिये रहल छी । [घर क चारू दिसि देखैत] घर क जेहन हाल अहाँ लोकनि बना देलहुँ अछि जे नवका भड़ैती केँ आनबाक पहिने अहू लेल कम पाइ नहि खर्च करै पड़त ।

जनक—नवका भड़ैती... माने ?

शान्तिनाथ—माने अहाँ सब कृपा क' कए ई घर खाली क' दियह ! हमर जे आर्थिक क्षति भेल, से भेल । मुदा सब दिन एना नहि चलि सकैत अछि ।

जनक—हम कहैत छलहुँ...

शान्तिनाथ—कहबाक लेल शब्द क अभाव अछि थोड़वे ? मुदा तँ एहि बेरटा ई नहि कहियौक जे हम कोसिस करब...

जनक—हम सत्ते कोसिस करब...

शान्तिनाथ—[आँखि बन्न क' कए] एकैस ।

जनक—हम अहाँ सँ कोना कहू जे हम कत्तेक तरहेँ चेष्टा...

शान्तिनाथ—[टोकैत] बाईस । [आँखि खोलैत] बस ! हमर गुरुदेव कहने रहथि— वेटा ! बाईस बेर कोसिस कैलाक बादो जखन कोनो काज नहि होइत छैक, त और कोसिस नहि करबाक चाही । तँ आव अहाँ चेष्टा-तेष्टा बन्द करू !

जनक—मुदा हम सब कतय जायब एहि हाल मे ?

शान्तिनाथ—एत्तेक विशाल शहर पड़ल अछि सामने आ' पूछैत छी कतय जायब ? नहि त आपन बेटा लग चलि जाउ !

जनक—[चौकैत] बेटा लग ? से कोना हैत ? ओकर एखन आमदे की हैतैक ?

शान्तिनाथ—कियैक ? खूब त कहैत छलहुँ जे एना खर्च कैलहुँ, ओतय पढ़ैलहुँ... क्लास मे फस्ट-सकेंड होइत अछि... तकरा नीक नौकरिओ नहि ध' भेलैक ?

जनक—स-से कियैक नहि हैतैक ? मुदा बम्बई मे त जानितहि छी रहै मे टाका कोना पानि जकाँ बहि जाइत अछि ।

शान्तिनाथ—तेहन बेटा सँ लाभे की जकरा आपन माय-बाप केँ खुएबाक क्षमता नहि रहैत छैक ? तकर त जीयब-मरब सब बराबरि...

जनक—[गोसा कए] शान्तिनाथ बाबू ! हमर बेटा लेल अहाँ मुँह सँ एहन अपशब्द नहि बहार करू ! अहाँ जानैत नहि छी जे ओ...

शान्तिनाथ—[रुष्ट भए] जखन एत्तेक भरोसा अछि आपन बेटा पर त ओकरा सँ उधार कियैक नहि लैत छी ? बजा कियैक नहि लैत छी ओकरा ?

जनक—ओ आबि रहल अछि । [एहि बात पर कमला चौकैत छथि ।]

शान्तिनाथ—आबि रहल अछि ? कहिया आओत ओ ? आबि कए करबे की करत ओ, जकर अपनहि हाल नीक नहि छैक ? आ' से आबौक चाहे नहि आबौक ! हम ताहि लेल बैसल नहि रहि सकैत छी । अगिला सोमवार केँ हमर नवका भड़ैती आबि रहल अछि । ता धरि हम ई घर खाली देखै चाहैत छी ।

जनक—मुदा अहाँ और किछु दिन ठहरि कियैक नहि जाइत छी ? बौआ आबि कए अहाँ क सबटा किराया चुका देत ।

शान्तिनाथ—तकर कोनो प्रयोजन नहि अछि ! अहाँ केँ विश्वास क' कए हम सब बेर ठगैलहुँ । ईहो अहाँ क एकटा नवे चालि थीक ।

कमला—[बोधक अढ़ सँ हाथ निकालैत आपन कंगन खोलि कए] तावत् हिनका ई द' दियन्हु ने, जाहि सँ ..

शान्तिनाथ—हम कोनो साहुकार नहि छी जे सोनाक कंगन लेब । हमरा भाड़ा चाही, सेहो चारि महीनाक... एहि सात दिनक भीतर । नहि त, खाली क' दियौक हमर घर ।

जनक—मुदा...

शान्तिनाथ—देखू जनक बाबू ! हमर नाम थीक शान्तिनाथ । काजो मे हमरा अशान्ति पसिन नहि... मुदा एहन परिस्थिति मे जँ कनेक अशान्ति करै पड़ैक, त पाछाँ हमरा दोष नहि देब !

[ई कहैत शान्तिनाथ निष्क्रान्त होइत छथि । जनक आपन माथ पर हाथ धेने धीरे-धीरे कुर्सी पर बैसि रहैत छथि । मंच अन्हार भ' जाइत अछि ।]

दोसर दृश्य

[मंचसज्जा पूर्ववत् रहत । जनक एसगरे रम्सी पर टांगल कपड़ा-लत्ता उठा कए चपेति रहल छथि ।]

वीन—[नेपथ्य सँ] काकाजी !! काकाजी !! नहि छी की ?

जनक—[स्नेहपूर्ण स्वरें] के छहक ? नवीन ? आबह, आबह !! [एकटा सात-आठ वर्षक बालक प्रविष्ट होइत अछि ।] आबह ; कतय गेल रहक ?

वीन—खेलैत छलहुँ ।

जनक—त चलि कियैक ऐलह ?

वीन—देखियौक ने— सुशीलबा की सब ने कहैत अछि ।

जनक—[धोती कें तह करैत] की कहलकह ओ ?

वीन—ओ कहैत छल— ओकर बाबूजी अहाँ सब कें एहि मकान सँ भगा देताह ।

जनक—[तह करैत-करैत हाथ थम्हि जाइत छन्हि । अपना कें सम्हारि कए पुनः तह करब शुरू करैत छथि ।] और की सब कहैत छलह ?

वीन—कहैत छल जे अहाँ सब नीक लोग नहि छी ; पैसा नहि दैत छी ओकर बाबूजी कें, और... और बहुत खराब-खराब बात सब कहैत रहैक ओ ।

तैं हमहूँ दू-चारिटा बात सुना देलियैक ।

जनक—ओ त ठीके कहैत छल ।

नवीन—की ठीक कहैत छल ? जे अहाँ सब बदमास छी ?

जनक—[मृदु-मृदु हँसैत] तखन तौही कहह— हम सब केहन छी ?

नवीन—अहाँ आ' काकी त कत्तेक नीक छी । हमरा कत्तेक नमंचूस दैत छी, कत्तेक दुलार करैत छी ।

जनक—तैयहु दू-एकटा बात त ओ ठीके कहलकह ।

नवीन—कोन बात ?

जनक—इयैह जे हम सब दू-एक दिन मे एतय सँ जा रहल छी ।

नवीन—कतय ?

जनक—कतय ? [सोचैते उदास भ' जाइत छथि] कतय, के जानैत अछि ?

नवीन—कहू ने कतय जा रहल छी ! कियैक जा रहल छी ?

जनक—कियैक जा रहल छी ? हम सब गरीब भ' गेल छी, तँ ।

नवीन—कियैक ? एतय गरीब लोग नहि रहैत अछि की ?

जनक—कोना रहत ? ईहो त दुकाने सन थीक । तौ दुकानदार कें पाइ नहि देबह त ओ तोरा नमंचूस देतह ?

नवीन—नहि दैत अछि बड़ेबाक दुकान पर... बड़ बदमास अछि...

जनक—बड़ेवे कियैक ? सब तेहने अछि । बिना पाइ के कतहु किछु नहि भेटैत छैक ।

नवीन—अहाँ कें पैसा नहि अछि त नमंचूस कोना दैत रहियैक ?

जनक—तखन पाइ रहैक ।

नवीन—आब ?

जनक—आब पाइ खतम भ' गेल अछि ।

नवीन—हमर बाबू जकाँ अहूँ औफिस जाउ ने । ओतय सँ पाइ ल' आनू ।

जनक—[हँसैत नवीन क माथ पर हाथ रखैत छथि ।] हमरा त औफिसो-वाला सब भगा देलक औफिस सँ ।

नवीन—तखन ? आब अहाँ कोनो काज नहि करब ?

जनक—[नवीन कें ल' कए खटिया पर बैसैत] करब कियैक नहि ? जखन तौ औफिस चलैबह, एहि देश कें चलैबह—तखन हमरा काज दिह' । तखन हम फेरो पहिलुके जकाँ काज करबह ।

नवीन—आ' हमरा नमंचूस देब ?

जनक—हूँ ।

नवीन—तखन हम दुनियाक सब लोग केँ काज दैब ।

जनक—तखन दुनियाक सब क्यो तोरा नर्मचूस दैतह । मुदा, नवीन ! तखन त तोरा पास ढेर रास नर्मचूस जमि जैतह । ओत्तेक नर्मचूस ल' कए तों करबह की ?

नवीन—सबटा बच्चा केँ एक-एकटा कए बाँटि देबैक ।

जनक—आ' हमरा ?

नवीन—अहूँ केँ देब । मुदा अहाँ त कहैत छी चलि जायब । हम त सबटा रास्ता चिन्हैत नहि छी । अहाँ केँ खोजब कोना ?

जनक—तखन तों दुनियाक सबटा रास्ता चीन्हि जैबह ।

नवीन—नहि । अहाँ आ' काकी एतहि रहू ।

जनक—कोना रहियह ? कहलियह ने, हमरा सभक पास आब पैसा नहि...

नवीन—[टोकैत] तखन अहाँ आपन बेटा केँ कियैक नहि बजाबैत छी ? हुनका पास त बहुत रास पैसा छन्हि । अहीं त कहैत छलहुँ... [जनक केँ निरुत्तर देखि] हुनके एतय मंगा ने लियह । ओ हमर बाबू जकाँ औफिस जैताह आ' अहाँ घर मे रहब । तखन अहाँ सँ हम खूब कहानी सुनब । [ताघत् कमला आबैत छथि ।] कहू ने काकाजी ! हुनका ल' आनबन्हि ने ?

कमला—[हँसैत] ककरा दय गप भ' रहल अछि ?

नवीन—[खटिया पर सँ उतरि कए कमला क पास जा कए] देखियौक ने ! काकाजो सँ कहैत छियन्हि अहाँ सभक बेटा केँ बजाबै त ओ किछु बाजते नहि छथि ।

कमला—[किछु काल चुप रहि जनक क दिसि देखैत छथि । जनक मूड़ी खसा लैत छथि ।] नहि नवीन, ओ त एखन नहि आवि सकैत छथि ।

नवीन—कियैक ?

कमला—ओ जतय रहैत छथि, ओत्तहु एकटा बच्चा रहैत अछि— ओकरो नाम थिकैक नवीन । ओ जँ हुनका छुट्टी दियै, तखने ने बौआ आवि

सकैत छथि ।

नवीन—हमरा ल' चलू ओतय ; त हम ओकरा सँ छुट्टी दिया देब ।

कमला—अच्छा ! तोरा ल' जैबह । एखन तों जा ! खेलह जा कए !!

नवीन—अच्छा । [कहैत दरवाजा दिसि बढैत अछि] मुदा हमरा छोड़ि कए नहि चलि जायव !

कमला—अच्छा ! [नवीन चलि जाइत अछि । जनक धीरे-धीरे माथ उठा कए कमला क दिसि देखैत छथि ।] शान्ति नाथ बाबू सँ त ओहि दिन कहि दैलियन्हि बौआ आबि रहल छथि । काहि दिन भरिक समय बाकी अछि । आब की हैत ? लोग की... ?

जनक—[तंग भ' कए] हैत की ? हमर बेटा जतय मोन हैत रहत... जहिया मोन हैत आओत । ताहि सँ ककरा की आवैत-जाइत छैक ?

कमला—जकरा मुँह छैक, से सुनैवे करत दू-दमटा बात । आइये त भाजी क माय कहैत छलीह— बेटा सियान भ' गेल छह । आब नहि खैबा-पीबाक भार लेतह त कहिया की करतह ?

जनक—जे कहैत अछि, तकरा कहै दियौक ?

कमला—सुनैत हमरा पडैत अछि ! जवाबो हमरे... [तावतू नवीन दौड़ल आवैत अछि ।] की भेलह नवीन ?

नवीन—अहाँ क घरक दिसि के सब ने आबि रहल छथि ।

जनक—[खटिया पर सँ उठैत] के आबि रहल अछि ? तों कोना जानलह ?

नवीन—हम सब खेलैत छलहुँ त देखलहुँ— दू गोटा लोग टैक्सी पर सँ उतरि कए अहीं सब दय पूछैत रहथि । ओसब आवितहि हैताह ।

जनक—[कमला सँ] के भ' सकैत छथि ?

नवीन—एक गोटा कें त बड़का मोंछ छन्हि आ' हाथ मे एकटा लाठी...

जनक—आ' दोसर गोटे ? [तखनहि बाहर सँ दू-एक गोटाक स्वर सुनबा मे आवैत अछि । जनक आ' नवीन दुनू बाहर जाइत छथि । जनक नेपथ्ये सँ कहैत छथि] आओल जाय ! आओल जाय !

[जनक, रामू आ' श्रीकान्त प्रविष्ट होइत छथि ।]

रामू—हिनका चिन्हलहुन्ह की नहि ?

जनक—नहि रामू काका ! हिनका त...

रामू—हिनका तौ बुचियाक बियाह मे देखने रहह हौ ! [जनक मोन पाड़ैक चेष्टा करैत छथि] वैह उपिन्दर बाबू क सार लगताह... श्रीकान्त मिसर नाम थिकन्हि हिनक...

जनक—ओ ! हैं हैं ; देखू त— कत्तैक लज्जाक बात थीक । हम त...

श्रीकान्त—ताहि सँ की भेल अछि ? एकहि बेरि त हमरा देखने हैब, सेहो पनरह वर्ष पहिने...

[कमला कनेक दूरहि सँ रामू कें गोर लागैत छथि ।]

जनक—[कमला क पास आबि कए] हे ! अहाँ कनेक जलपान क व्यवस्था करियन्हु हिनका सब लेल, ता हम... [रामू क पास आबि कए] चलल ने जाय ! हाथ-पैर धो लेल जाय ।

रामू—[जनक कें व्यस्त होइत देखि] नहि-नहि, तोरा व्यस्त हैबाक प्रयोजन नहि ! हम सब खा-पीबि कए आयल छी ।

जनक—नहि-नहि ! से कोना हैत ? जखन ऐबे कैलहुँ, तखन किछु त खाइये पड़त । गरीब छी, ताहि सँ की ?

रामू—[खुश भ' कए] बेस-बेस !

[कमला निष्क्रान्त होइत छथि ।]

जनक—मुदा अहाँ सभक सामान कतय अछि ?

श्रीकान्त—[एक बेरि रामू क दिसि देखैत] से त हम सब...

रामू—सामान होटेले मे अछि ।

जनक—होटल मे ? नहि-नहि, ई कोना भ' सकैत अछि ? हमरा एतय रहैत अहाँ सब होटल मे कोना रहब ?

रामू—त की भेलैक ? होटल त लगे पास मे छैक ।

जनक—तखन त और नीक ! सामान अनबा मे कोनो दिक्कत नहि हैत ।

रामू—कियैक तौ बेकार कष्ट करबह ? हम सब न बस काहिये नार्थ बिहार
वा मिथिला सँ चलि जैबह ।

जनक—एके दिन रहब, त कथी लेल होटल मे पड़ल रहब ? बड़ आदमी हम
नहि छी जे हजार टाका खर्च करब । हम सब जे खाइत छी, सैह
खुआएब ! से जँ पसिन नहि हो, तखन...

श्रीकान्त—नहि-नहि ! ई की कहैत छी ? से सोचितहुँ त ऐबे कियैक करितहुँ ?

रामू—तोरा कहैत नहि रहियह श्रीकान्त, जे सोभे जनक क ओतय चलह ।

श्रीकान्त—अहाँ दय तत्तेक ने प्रशंसा सुनने छियैक, जे...

रामू—जेहन जनक, तेहने ओकर बेटा । अजुका युग मे... हँ, हम त बिसरिये
गेल छलहुँ । बौआ कतय छह तोहर ? नहि देखैत छियह ?

जनक—ओ त... माने...

रामू—बुभलियह ! कत्तहु गेल हैतह अपन दोस्त महीमक पास...

जनक—नहि, से नहि...

श्रीकान्त—तखन ?

जनक—ओ त बाहरे रहैत अछि ।

रामू—बाहर ? कतय ?

जनक—ओ त नौकरी क' रहल अछि ने, तै... खैर ई सब गप-सप त हैते
रहत । चल, पहिने होटल सँ...

रामू—हँ, हँ ! सैह नीक । चलह हौ श्रीकान्त !

[तीनो गोटे उठैत छथि । बत्ती मिभा जाइत अछि ।]

तेसर दृश्य

[मद्धिम आलोक मे रामू आ' श्रीकान्त के सूतल देखल जाइत अछि ।
दरबाजा क पास ठाढ़ भ' कए जनक आ' कमला बातचीत करैत छथि ।
हिनका दुनू पर अल्प रेख स्थापित छन्हि ।]

जनक—भोर त भ' गेल अछि । मुदा ई सब त सूतले छथि ।

कमला—ई सब की कहने रहथि ? आइ जैताह ?

जनक—हँ, आइये सँभुका पहर जैताह ।

कमला—गाड़ी पर चढ़ावै जायब की ?

जनक—पागल भेलहुँ ? हिनका सबक संग जैबाक अर्थ भेल हमरा टैंक्सी
किराया सेहो गनै पड़त । ओत्तेक पाइ कतय सँ आओत ? एहि एकहि
दिन मे की कम पाइ खर्च भेल अछि ?

कमला—सेहो ओ सोनाक चूड़ी बाँचल छल, तँ । नहि त...

[दुनू किछु काल चुप रहैत छथि ।]

जनक—ओसब बौआ दय पूछैत छलाह ।

कमला—की कहलियन्हि ?

जनक—की कहबन्हि ? नौकरी करैत अछि एम० ए० पास कैलाक बाद...

बम्बई मे रहैत अछि, इयैह... और की कहितहुँ ?

कमला—ई सब आयल कियैक छथि, से पता लागल ?

जनक—राति खन त गामे-घरक गप-सप चलैत छल, आ'...

[एतबा मे खोंखीक शब्द सुनि कए दुनू चुप भ' जाइत छथि । रामू जागि
जाइत छथि । कमला निष्क्रान्त होइत छथि । जनक रामू क दिसि बढ़ैत
छथि । तावत् मंच क आलोक धीरे-धीरे बेसी भ' उठैत अछि ।]

नीन भेल कि नहि नीक जकाँ ?

रामू—खूब सुतलहुँ की ! सबटा थकान दूर भ' गेल अछि ।

[तावत् श्रीकान्त सेहो जागि जाइत छथि ।]

जनक—मुदा ताहि सँ लाभ की भेल ? आइये कहैत छी चलि जायब । और दू-चारि दिन...

श्रीकान्त—असल मे गिरहथक लेल त एखन घर मे रहब अत्यन्त आवश्यक होइत अछि । कटनीक समय थिकैक... घर मे क्यो अछि नहि जे सगहारत । सबटा भार छोडका लोग पर द' कए ऐलहुँ । आ' आइ काल्हि त जानिते छी ककरो विश्वास नहि...।

रामू—हिनकर बेटा त पटना मे नौकरी करैत अछि । तै एखन घर मे माय-बेटी कें छोड़ि कए क्यो नहि... नहि त...

जनक—मुँह-हाथ धो ने लियह तावत्... नाश्ता तैयार अछि ।

रामू—तोरो स्वभाव तोहर बाबूए जकाँ भेलह— विनय आ' अतिथि सेवा मे कम नहि जाइत छह ।

जनक—[ताखा पर सँ दैतमनि उठा कए दैत] चलू ! अहाँ दुनू कें पानि क कल देखा दैत छी । [रस्सी पर सँ गमछी उठा कए श्रीकान्त कें दैत आगाँ बढैत छथि । तीनो गोटे मंच सँ निष्क्रान्त भेलाह । जनक घुरि आवैत छथि आ' घरक अस्त-व्यस्त चीज-वस्तु कें सजाबै लागैत छथि । पतबा मे नेपथ्य सँ शान्तिनाथ क स्वर सुनल जाइत छन्हि ।]

शान्तिनाथ—[नेपथ्य सँ] जनक बाबू ! जनक बाबू !!

जनक—[शान्तिनाथ क स्वर सुनितहि चौँकि उठैत छथि ।] के ? शान्तिबाबू ?

शान्तिनाथ—[प्रविष्ट भए] हँ, हमहीं छी । आइ सातम दिन थीक । तैं सौँचलहुँ भोरे-भोर अहाँ कें सुप्रभात क' आवी ।

जनक—[अनुरोध क स्वरें] मुदा हमर घर मे त काल्हि अतिथि आयल छथि...

शान्तिनाथ—से काल्हि गंधे सँ पता चलल छल । एहि दने जाइत छलहुँ त सूँघि कए बुझलहु जे मांस रिनहल जा रहल छल ।

जनक—शान्तिनाथ बाबू! कृपा क' कए हमरा और एक दिन समय दियह ।

ओ सब आइये चलि जैताह ।

शान्तिनाथ—जाथु; ताहि सँ हमरा की ?

जनक—हुनका सभक सामने हमरा बेइज्जति नहि करू... हम कल जोड़ैत छी

शान्तिनाथ—हम अहाँ केँ पहिनहि कहि देने छलहुँ जे एहि बेर हम कोनो बहाना नहि सुनब । आइये दुपहरि धरि हमरा ई घर खाली चाही । ता धरि हमर नवका भड़ैती आवि जायत ! हम बहुत दिन सँ हुनका घुरा रहल छियन्हि— 'आइ नहि, कालिह' कहि कए । मुदा आजुक लेल हमहीं हुनका कहि देने रहियन्हि । ओ आविते हैताह ।

जनक—मुदा अहाँ नहि बूझि रहल छी जे हमर हाल की हैत ।

शान्तिनाथ—हम सब किछु बूझि रहल छी । अतिथि केँ खुएबाक लेल त टाका क जोगाड़ ठीके क' सकलहुँ । आ' हमरे किरायाक बेरि मे टाका नहि रहैत अछि । ओ सब नहि चलत ।

जनक—मुदा.....

शान्तिनाथ—कोनो मुदा नहि । [रामू आ' श्रीकान्त क गला क स्वर नेपथ्य सँ भासल आबैत अछि ।] हम प्रयोजन पड़ला पर अशान्ति सेहो क' सकैत छी ।

जनक—हे; ओ सब आवि रहल छथि । हुनका सभक सामने किछु नहि कहबन्हि । ई हमर इज्जतिक प्रश्न थीक ।

[शान्तिनाथ निरुत्तर रहैत छथि । बात करैत-करैत रामू आ' श्रीकान्त दरवाजा सँ भीतर आबैत छथि । मुदा एकटा अनचिनहार व्यक्ति केँ ठाढ़ देखि कए दुनू चुप भ' जाइत छथि ।]

रामू—[जनक आ' शान्तिनाथ—दुनू केँ निरुत्तर देखि] जनक ! हिनका नहि चिन्हलियन्हि ।

जनक—ओ; ई छथि शान्तिनाथ बाबू... हमर मकान मालिक । [रामू आ' श्रीकान्त नमस्कार करैत छथि । शान्तिनाथ हाथ जोड़ैत छथि । जनक

शान्तिनाथ सँ कहैत छथि—] आ' ई छथि रामू काका, अपने गाम मे रहैत छथि... आ' ओ भेलाह श्रीकान्त बाबू... हिनक मित्र...।

रामू—लागैत अछि, अपनहु मैथिले छी । नहि ?

शान्तिनाथ—हँ ।

रामू—चाह ! बड़ खुशी भेल अहाँ सँ परिचित भए । मैथिल भ' कए बंगाल मे कलकत्ता सन शहर मे एतेकटाक मकान बनौने छी— ई बड़ आनन्दक गप । श्रीकान्त—आ' तकर बादो जे ओ गाम घरक लोग केँ नहि बिग्नरलन्हि, हमरा लखे से और आनन्द क बात थीक । एहि मकान क बेसी फ्लैट मे त मैथिले परिवार केँ देखैत छियन्हि ।

जनक—से हिनक उदारता थीकन्हि ।

शान्तिनाथ—[जनक क दिसि तीर्यक् दृष्टियें देखैत] उदारताक कोन बात भेल एहि मे ? मकान-मालिक केँ चाहियन्हि पाइ... भड़ैती कतौको होथि...

रामू—मुदा भड़ैती नीक रहने त अहीं केँ फायदा...

शान्तिनाथ—से ठीक कहलहुँ ।

रामू—आ' मैथिल त ओना शान्तिप्रिय होइते छथि ।

शान्तिनाथ—से होइत छथि ।

रामू—अहाँ सँ की कहू ? मैथिल त एतेक ने शान्तिप्रिय होइत छथि जे ओकर मिथिला केँ वयो बंजर क' दैक, ओकर भाषा आ' अधिकार केँ छिनियो लैक, तैयहु ओ किछु नहि कहत ।

श्रीकान्त—[हँसैत] ई त यथार्थ कहलहुँ ।

शान्तिनाथ—हमहुँ तहिना शान्तिप्रिय छी । नहि त आइ एकटा सँ चारिटा मकान बना लेने रहितहुँ ।

रामू—से कोना ?

जनक—[बात केँ टारैत] से सब बड़ नमहर कहानी थीक । हम बरु जलखै केर बन्दोबस्त करी ।

राम—दुनू होमै ! गप आ' जलखै मे कोनो विरोध अछि थोड़बे ?

शान्तिनाथ—कतेको व्यक्ति एहन छथि जे कैक महीनाक भाड़ा नहि देने छथि ।

हम शान्तिप्रिय नहि रहितहुँ त एहन भड़ैती केँ कहिया ने जबरदस्ती भगा दितहुँ । एहि लेल हमरा कम नोकसान भेल अछि ? मुदा, आव स्थिर कैने छी— जे एहि सब मामला मे आपन मैथिलत्व क वर्जन करी ।

रामू—हँ, तखन अहाँ क भड़ैती लोकनिये जे नीक होथि, जेना कि जनक छथि... तखन त...

शान्तिनाथ—हँ, तखन त भाड़ा क लेल चिन्ते नहि करै पड़त । जनक बाबू क स्थान एहि मे सब सँ ऊपर छन्हि ।

[एहि बात पर रामू आ' श्रीकान्त क पाछाँ सँ जनक कल जोड़ैत इङ्गित सँ शान्तिनाथ केँ एहि विषय पर आलोचना केँ बन्द करबाक अनुरोध करैत छथि ।]

श्रीकान्त—हमहुँ सब ओतहि सँ हिनक तसेक ने प्रशंसा सुनैत छियन्हि जे...

रामू—तँ श्रीकान्त बहुत दिन सँ हमरा कहैत छल जे चलू । हुनका सँ परिचय करा दियह !

श्रीकान्त—एतेक बेरि कहबाक बादे त अहाँ ल' आनलहुँ । नहि त...

रामू— [मृदु हँसैत] और ई मात्र परिचये धरिक सम्बन्ध नहि बनाबै चाहैत छथि ।

जनक—तखन ?

रामू—दुनू परिवार मे जाहि सँ एकटा मधुर सम्बन्ध स्थापित होमै, हमहुँ ताहि लेल विशेष उत्सुक छी ।

श्रीकान्त—गत वर्ष जेना धूमधाम सँ बेटा क बियाह करौने रहियैक, एहि वर्ष तहिना खूब नीक जकाँ आपन बेटा क बियाह करैबाक इच्छा अछि ।
[रामू केँ देखा कए] हिनका सँ हम कहनहि रहियन्हि जे ताहि लेल दस-बीस हजार जँ खर्चो करै पड़ैक त हम तैयार छी । मुदा लड़का टा नीक आ' नीक घरक हो, तखनहि तँ...

जनक—हमरा नजरि मे त तेहन कोनो लड़का नहि अछि... हँ, हमर सासुर

भे एकटा... मुदा ओकर उमर बेसी हैत... [तावत् कमला जलखै ल' आनैत छथि । जनक उठि कए हिनका सब कें जलखै दैत छथि । तकर बाद कमला तीन कप चाय आनैत छथि आ' जनक रामू, श्रीकान्त आ' शान्तिनाथ क दिसि चाय क प्याली बढ़ाँ दैत छथि ।] लेल जाय !

रामू—आ' तों ?

जनक—चाय त हम पीबिते नहि छी । आ' जलखै हम भोरे कैने छी । बहुत भोरे कें उठैत छी कि नहि !

रामू—कियैक ? भोरे कें औफिस जाइत छह की ?

जनक—हूँ ।

रामू—तखन आइ नहि गेलह ?

जनक—अजुका लेल हम काल्हिये छुट्टी नेने छलहुँ ।

रामू—देखह त... तों हमरा सभक लेल...

शान्तिनाथ—मुदा काल्हि त रवि छल... त काल्हि छुट्टी कोना लेलहुँ ?

श्रीकान्त—ठीके ! हमरा सभक लेल अहाँ लोकसान क' रहल छी !

शान्तिनाथ—[जनक क निषेधपूर्ण इङ्गित क उपेक्षा करैत] ओ ! हम त विसरिये गेल छलियैक ! आइ काल्हि त हिनका छुट्टीये छुट्टी रहैत छन्हि ।

श्रीकान्त—से कियैक ?

शान्तिनाथ—छुट्टी ल' कए ई त कतहु घुरै जायबला रहथि ।

श्रीकान्त—सत्ये की ? कहिया ?

जनक—नहि... माने...

शान्तिनाथ—ई लजा रहल छथि... हमरा त अजुके नाम कहने रहथि ।

रामू—आइये जायबला छह तों ? एह हे ! देखह त... आ' ई नहि कहितथि त हम सब जानबो नहि करितहुँ ! जे हो...

जनक—नहि-नहि । हम त छीहे...

शान्तिनाथ—दुपहर धरि त छथिये ! टूने त प्रायः...

जनक—नहि, हम सब...

श्रीकान्त—देखू जनक बाबू! हमरा सबक लेल आपन प्रोग्राम कें स्थगित नहि राखू! हमहूँ सब त बेड़ियाक टूँन पकड़बे करब। तैं संगे चलब एतय सँ। नहि ?

जनक—से देखल जैतैत। अहाँ आपन बेटी क बियाह दय की ने कहैत छलहुँ ? कहू त हमर सासुर क ओहि लड़के पर...

रामू—अरे, रहै दहक आपन सासुरक लड़का कें सासुरे मे। तकरा दय हम सब थोड़बे बात करै आयल छियह !

जनक—तखन ?

रामू—[श्रीकान्त सँ] नहि ! जनक एतेक सोफ़ लोग अछि जे... [जनक सँ] हम सब त तोरे बेटा पर कथा ल' कए आयल छियह !

जनक—हम... माने... हमर बेटा पर ?

[शान्तिनाथ एतबा मे उच्च स्वरें हँसै लागैत छथि ।]

रामू—[हँसै लागैत छथि] बुझू ! हम सब बात क' रहल छलहुँ जनक क बेटा क बियाह क आ' ओ

शान्तिनाथ—[हँसी कें सम्हारैत] जनक बाबू क बेटा पर कथा ? [पुनः हँसै लागैत छथि ।]

रामू—से कियैक ? हँसैत कियैक छी ?

शान्तिनाथ—हँसैत छी एहि लेल जे जँ ई बियाह सपना मे हो त ठीक अछि । नहि त...

रामू—[रुष्ट भ' कए] माने ?

शान्तिनाथ—माने ? हिनके सँ पुछियन्हु ते ! की ओ जनक बाबू ? किछु कहियन्हु ते !

जनक—हँ... नहि...

शान्तिबाबू—पूछियन्हु ने कतय छथि ओ ?

जनक—से ओ जानैत नहि छथि की ?

रामू—ओ त बम्बई मे रहैत अछि... से सब जानैत अछि...

शान्तिनाथ—पूछियन्हु, कतय रहैत अछि ओ ? कोन मुहल्ला मे ?

जनक—ओ... माने... एखन त मकान बदललक अछि... तैं—

शान्तिनाथ—[रामू सँ] अहाँ हिनक बेटा केँ एमहर देखने छी ?

रामू—देखब कियैक नहि ? बुचियाक बियाह मे त जनक ओकरा नेने आयल छल । तखनहि...

शान्तिनाथ—मुदा एमहर त नहि ने देखलियैक ?

रामू—से कोना देखब ? होस्टल मे रहि कए पढ़ैत छल... तकर बाद त नौकरीमे धौलक...

शान्तिनाथ—[हँसैत] जनक बाबू सँ पूछियन्हु त वैह एकर पहिने कहिया देखलन्हि आपन बेटा केँ ?

जनक—[रुष्ट भए] की कहैत छी ?

शान्तिनाथ—[जनक बाबू क उपेक्षा करैत] हमरा त कहियो-कहियो सन्देह होमै लागैत अछि जे ओ बाँचलो अछि वा नहि...

जनक—[चीत्कार करैत] शान्तिनाथ बाबू ! बन्द करू बकवास !

रामू—की बात थीक ? हम सब त किछु नहि बूझि रहल छी । ई सब प्रश्न उठैत कियैक अछि ?

शान्तिनाथ—हिनका सभ केँ आइ पाँच-सात वर्ष भ' गेल एहि मकान मे । हजार बेरि सुनलियन्हि जे हिनक बेटा ई छथि त ओ छथि... बम्बई से छथि... खूब कमाबै छथि... मुदा कहियो त देखलियन्हि नहि... आ' जकर बेटा खूब कमाबैत अछि ओ एहि मुहल्ला मे एहन घर मे कियैक पड़ल रहत ?

जनक—भगवान क सपथ, चुप रहू ! शान्ति सँ रहै दियह हमरा...

[तावत् नेपथ्य सँ ककरहु गलाक आवाज सुनल जाइत अछि ।]

कार्तिक—[नेपथ्य सँ] शान्तिनाथ बाबू छी की ?

शान्तिनाथ—[दरवाजा क पास जा कए] के छी ? ओ ! अहाँ ? रहू... एक मिनट ! [घुरि कए जनक क पास आवि] जनक बाबू ! हमर नवका

भड़ैती आवि गेलाह। आव अहाँ शान्ति सँ रहू... मुदा, एतय नहि—
आन कतहु .. जाहि सँ हमहूँ शान्ति सँ रहि सकी !

रामू—[रामू आ' श्रीकान्त एक दोसराक दिसि देखैत छथि। जनक निरुत्तर
ठाढ़ रहैत छथि।] की बात थीक शान्तिनाथ बाबू ? हम सब त किछु
नहि बुझि रहल छी।

शान्तिनाथ—[क्रूर दृष्टियें जनक क दिसि देखैत] बुझब कोना ? ई अहाँ
सभक दृष्टि पर धूरा जे भौंकने छथि। अहाँ क ई आदर्श व्यक्ति आइ
पाँच मास सँ हमरा भाड़ा नहि देने छथि। ने हिनका नौकरीये छन्हि जे
ई पैसा देताह। चारू कात क लोग सँ उधार ल' कए आपन शान देखा
रहल छथि।

रामू—जनक, ई हम सब की मुनि रहल छी ? की ई सत्य थीक ?

[जनक जवाब नहि दैत छथि।]

शान्तिनाथ—हमरा त ईहो सन्देह होइत अछि जे आपन बेटा दय जे चारू
कात ई कहने घुरैत छथि, से सबटा फूसि थीक। भरिसक हिनकर उद्देश्य
छलन्हि बेटा सँ बियाहक नाम पर टाका ल' लेबाक !

जनक—[आहत स्वरें] शान्तिनाथ बाबू। ई अहाँ की कहि रहल छी ?

शान्तिनाथ—ठीके कहि रहल छी। ई त नीक भेल अहाँ सब कें पहिनहि
सबटा पता चलि गेल। नहि त...

श्रीकान्त—मुदा बेटा कें बिना देखने हम सब तिलक थोड़बे देतिहन्हि ?

शान्तिनाथ—[हँसैत छथि। श्रीकान्त सँ] अहाँ त हिनकर बेटा कें देखनहु
नहि छियन्हि। [रामू सँ] और अहाँ ! पनरह वर्ष पहिने देखने रहि-
यन्हि। आइ जँ पाइक लालचें आन ककरहु ओ बेटा कहि कए ठाढ़ क'
देथि त अहाँ चिन्हि सकबन्हि ?

जनक—शान्तिनाथ बाबू !

शान्तिनाथ—[गरजैत] अहाँ चुप रहू ! अहाँ क चारि सौ बीसी सबटा हम
जानैत छी।

जनक—मुदा रामू काका ! विश्वास करू...

रामू—छी-छी, जनक ! हम सब तोरा दय की ने सुनैत छलहुँ आ' तों...

छी छी-छी !

कार्तिक—[तावत् असन्तुष्ट भए प्रविष्ट होइत] की भेल शान्तिनाथ बाबू ? हमरो कारखाना जाय पड़ैत कि नहि ? अहाँ कहने छलहुँ अजुका नाम आ' आइ धरि कमरा खाली नहि... [तावत् जनक क दिसि हुनक नजरि पड़ैत छन्हि आ' ओ चुप भ' जाइत छथि ।]

जनक—[कार्तिक कें देखि आनन्दिता भए] बौआ ! [कहैत ओ आगाँ बढ़ैत कार्तिक क हाथ धरैत छथि ।] बौआ ! तों आबि गेलह ! मुदा तों कोना ऐलह ? एतहुका पता कतय भेंटलह ?

शान्तिनाथ—[रामू सँ] आव हमर नवका भड़ैतिये कें ई बौआ बनैबाक चेष्टा क' रहल छथि ।

जनक—चेष्टा कियैक करब ? इयैह त थिकैक हमर बेटा, जकरा दय हम...

शान्तिनाथ—कियैक केरो भूठ बाजि रहल छी ? ने ई बम्बई मे रहैत छथि, ने ई हजारक हजार टाका कमबैत छथि...

जनक—[करुण स्वर मे, कार्तिक सँ] बौआ ! तों कहि दहक हिनका सब कें जे तोंही...

कार्तिक—की कहि देबन्हि हिनका लोकनि कें ? के छी अहाँ जे तखन सँ 'बौआ' 'बौआ' क रट लगौने छी ? के थीक अहाँ क बौआ ?

जनक—[आहत भए] तों... तों कहैत छह... ?

कार्तिक—शान्तिनाथ बाबू ! के छथि ई सब ? अहाँ त कहने छलहुँ सोमवार धरि कमरा खाली भेंटि जायत, मुदा ई सब...

[तावत् जनक दुनू हाथें मुँह भाँपि लैत छथि]

शान्तिनाथ—अहाँ व्यस्त जूनि होड कार्तिक बाबू ! ई एकटा चारि सौ बीस जूटि गेल छलैक... एखनहि कमरा खाली भ' जायत...

नवीन—[दौड़ैत प्रविष्ट भए] काकाजी ! काकाजी ! इयैह छथि ने अहाँ क

बौआ ? अहाँ जे हमरा पुरनका फोटो देखौनै छलियैक, ई त देखै मे ओहने छथि । [जनक केँ निरुत्तर देखि] कहियौ ने काकाजी ! इयैह छथि ने ओ ?
कमला—[प्रविष्ट भए, अस्पष्ट स्वरें] बौआ !

जनक—[मुँह पर सँ हाथ हँटा कए] बौआ ? के थीक बौआ ?

कमला—की कहैत छी ?

जनक—ठीके कहैत छी कमला । ई नहि थीक हमरा सभक बौआ !

कमला—[कार्तिक क पास जा कए] ई की कैलह तों ? तोहर बाबू तोरा पर आपन सब किछु स्वाहा कैलथुन्ह कि इयैह दिन देखबा लेल ? तोहर मोन मे हमरा सभक लेल कनेको जगह नहि छह ?

जनक—ककरा सँ बात क' रहल छी कमला ? देवार सँ ? ओकर मोन मे हमरा सभक लेल जगह रहितैक त आइ हमरा सभक ई हाल होइत ? हमर मोन त एकरा दस वर्ष पहिनहि चीन्हि गेल छल, जखन ई शराब आ' जुआ क पाछाँ हमर खून-पसीना क अरजल पैसा बहौनाइ शुरू कौने छल । मुदा कमबख्त हृदय कहाँ मानैत अछि, से... [कहैत अश्रुसंवरण क वृथा चेष्टा करैत छथि ।]

[कमला कानै लागैत छथि ।]

मधीन—काकाजी ! ई अहाँ क बौआ नहि छथि त कतय छथि ओ ?

जनक—ओ अछि । ओ त सविखन हमरहि पास रहैत अछि... एतय, हमर हृदय मे... नहि कानू कमला, चलू ! आब हमरा सभक दिन शेष भेल अछि । ई हम सब गलत दुनिया मे आवि गेल छलहुँ । एतय सम्बन्ध आने तरहक होइत अछि । एतहुका नियम किछु औरे थीक... चलू कमला । एतय जीवन एकटा चालाकी थीक... हमरा सँ से आब नहि हैत, और नहि हैत... [कहैत-कहैत वाक् रुद्ध भ' जाइत छनिह । दुनू गोटे दरवाजा क दिस बढ़ैत छथि । कार्तिक मुँह घुरौने ठाढ़ रहैत छथि । मंच अन्हार भ' जाइत अछि ।]

इन्द्रमा

पात्र-परिचय

अवध कुमार सिंह—एक उच्च घरक उच्चशिक्षित, नव-विवाहित
एवं भद्र राजपूत युवक ।

इन्द्रमा —मध्यवित्त घरक एक अपूर्व सुन्दरी, मुंदा चाक्-
शक्ति-रहिता नवविवाहिता कन्या—अवधक
पत्नी ।

अशोक कुमार सिंह—अवधक छोटे भाइ ।

गीतहारि मित्रगण ।

व्यवस्थादि

- समय : विवाहक बाद, चतुर्थीक राति ।
- स्थान : अवध क घर, इन्द्रमाक सासुर ।
- मंचसज्जा : पलंग, सुदृश्य ओछाओन, फूल, टेबुल, चेर, कागज, कलम,
एकटा खिड़की आ एक दरबज्जाक फ्रंम ।
- अंगसज्जा : इन्द्रमाक लेल विवाहक पोशाक लाल बनारसी; सिनूर; काजरि;
लाली; कान-नाक-हाथ-गला-आ' पैरक गहना; रूमाल आदि ।
अवधक लेल दामी सिल्कक कुर्ता, रंगल धोती, घड़ी, हाथ में
माला आदि ।
अशोकक लेल मूल्यवान कुर्ता-पजामा ।
- आलोक : अशोकक आगमनक पूर्व धरि आलोक वन्या, जकर रंग हैत
नीलाभ ।
अशोकक आगमनक बाद वैह आलोकक रंग रहत लाल ।
अन्त मे एक मध्यवर्ती आलोक वृत्त (मीडियम स्पोट) क
काज अछि ।
- संगीत : दूटा कोहवरक गीत : “बैसल छथि भगवान हे”..... एवं
“कंचन महल मानिक केर दियरा”...” ।
एकरा छोड़ि, कए आन कोनो संगीतक योजना नहि अछि,
सुदा चाही त अतिरिक्त संगीत द' सकैत छी ।

इन्द्रमा

१४४ सँ कोहबरक गीत सुनल जा रहल अछि। विवाहक बाद चतुर्थीक
थिक। वर-बधू गेठबन्धन कयने चौठक याग-यज्ञ-पूजादि करबाक लेल
वर मे आयल छथि। चतुर्थीक करणीय काज सब भ' गेल अछि। आव
बधूक मिलनक समय आयल अछि। वर अवध कुमार सिंह शिक्षित तथा
राजपूत युवक छथि—नीक नौकरी करैत छथि। हिनक व्यवहार मे शहस्र
।क छाप छन्हि। बधू अपूर्व सुन्दरी, मुदा मध्यवित्त घरक कन्या छथि।]

कोहबरक गीत

बैसल छथि भगवान हे ओहि कोहबर घर मे
बैसल छथि सीताराम हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि चौर डोलौती हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि अंग लगौती हे ओहि कोहबर घर मे
छोटकी सारि चौर डोलौती हे ओहि कोहबर घर मे
सरहोजि अंग लगौती हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि भरती सचार हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि डाबर नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे
अपन सासु भरती सचार हे ओहि कोहबर घर मे
छोटकी सारि डाबर नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि पान नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे
केओ सखि भारी नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे
सरहोजि पान नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे
छोटकी सारि भारी नेने ठाढ़ हे ओहि कोहबर घर मे

केओ सखि पलंग ओछौती हे ओहि कोहबर घर मे
 केओ सखि अंग लगौती हे । कोहबर घर मे
 सरहोजि पलंग ओछौती हे ओहि कोहबर घर मे
 कनियाँ प्यारी अंग लगौती हे ओहि कोहबर घर मे

। अन्हारहि मे एहि गीतक समाप्तिक संगहि संग हँस्सीक आवाज अबैत अछि ।
 कयो कहैत अछि—‘भेलह, आब चलह एतय सँ ।’ दोसर कयो कहैत अछि :
 —‘ठीके... गीत बहुत भेल अछि... आब चलू देखैत नहि छियैक... अहाँक
 माइक मुँह... और देर करब त...’ । एतबहि मे सब कयो हँसैत छथि आ
 हँसैत-हँसैत घर सँ चलि जाइत छथि । दरबज्जा बन्द करवाक शब्द होइत
 अछि । जखन सबटा शब्द विलीन भए परिवेश शान्त भ’ जाइत अछि, तखन
 मंच आलोकित भ’ उठैत अछि । मंचक बाम दिसि एकटा खिड़की आ दहिना
 दिसि एकटा दरबज्जा देखल जाइछ । मंचक मध्य मे एकटा पलंग राखल
 अछि फूल सँ सजाओला एक कोना मे एकटा टेबुल आ चेयर अछि । कनियाँ
 कुर्सी पर माथ मुका कए बैसल छथि । अबध दरबज्जा लग पाछाँ दिसि मुँह
 घूरा कए ठाढ़ छथि ।]

अबध—[गला खखारैत छथि । पाछाँ घुरैत कनियाँ दिसि देखैत छथि । की
 करताह किछु नहि फुरैत छन्हि । बेर-बेर अपन पोशाकक विसि देखैत
 छथि जे कत्तहु त्रुटि रहि गेलन्हि कि नहि । तकर बाद माथ पर हाथ
 फेरैत बुझवाक प्रयास करैत छथि जे हुनक केश ठीक-ठीक थकरल छन्हि
 वा नहि । तकर बाद धीरे-धीरे पलंगक दिसि आगाँ बढ़ैत छथि । पलंगक
 पास आबि कए थम्हैत कहैत छथि] अहाँ केँ बड़ कष्ट भेल हैत... ई सब
 त अहिना माने आधा राति बिना बितौने जैबे नहि करैत छथि...
 [एकर उत्तर मे नातिदीर्घ घोषक अढ़ सँ कनियाँ माथ डोला कए हुनका
 कोनो कष्ट नहि भेल छन्हि, एहन इंगित करैत छथि ।] ...एखनहु देखू ने
 ओसब गेल हैतीह थोड़बे... एतहि कत्तहु हैतीह । [ई सुनिह लगैत

अछि जे कनियाँ जेना किछु वस्तु सन भ' जाइत छथि । सशंक चित्त भए ओ मुँह उठा कए देखै लगैत छथि जे वयो अछि कि नहि । तहिना देखैत-देखैत पतिक दिसि दृष्टि पड़ि जाइत छन्हि कि ओ माथ भुका लैत छथि लार्जे । अवध अपन नवविवाहिता पत्नीक एहि लज्जा भाषक नीक जकाँ उपभोग करैत कहैत छथि—] से जौ ओ सब सुनबाक लेल दरबाजा जा देबार मे कान केँ साटिये लेने हैतीह — त करै दियन्ह । आ से हैवे करतीह कि... एतबा मे नेपथ्य सँ दुइ-तीन गोटेक हँसरी क शब्द भासल अबैत अछि । चौकि कए अवध दरबज्जाक दिसि देखैत छथि आ कनियाँ घोघ केँ और नमहर बना लैत छथि । रहू हम देखैत छियन्हि ज के सब छथि... के सब रहतीह से त हमरा पते अछि ई सबटा छोटकी भौजीक काज थिकन्हि..... ।

[अवध ई कहैत निष्क्रान्त भ' जाइत छथि । कनियाँ ब्लाउज मे खोंसल कलम निकालि कए एक टुकड़ी कागज पर किछु लिखैत छथि । तावत् अवध पुनः प्रविष्ट होइत छथि । हुनका देखितहि ओ कलम आ कागज नुका लैत छथि । मुदा अवध से देखि लैत छथि । ओ पास आबि कए कहैत छथि—] भगा देने छियन्हि सब गोटा केँ । आब लगपास वयो नहि छथि । [तैयहु कनियाँ केँ निरुत्तर देखि कए] की लिखैत छलहुँ... देखियैक ! [ई सुनितहि कनियाँ लिखलका कागज केँ और नुकाबै चाहैत छथि] अच्छा-अच्छा... नहि देखब अहाँ की लिखैत छलहुँ ! मुदा... [और अगुआ कए] ई घोघक अढ़ मे जे अपन मुँह केँ नुकाकए रखने छी... से त कम सँ कम देखै दियह ! [अवध घोघ हटा दैत छथि । कनियाँक अपूर्व सुन्दर मुख देखि कए ओ आनन्दित होइत छथि । कनियाँ अपन दुनू हाथेँ आँखि मुनि लैत छथि ।] एतेक सुन्दर मुख त हम एक सपने मे देखने छलहुँ । मुदा मुँह जखन देखै देलहुँ, तखन पुन अपन आँखि केँ कियैक नुका लेलहुँ ? से हमरा देखै नहि बैब ? [कनियाँ ई सुनितहि हाथ हटा कए धीरे-धीरे आँखि खोलैत छथि । एक बेर पतिक

दिसि देखिये कए आन दिसि मुँह घुरा लैत छथि लाजें । अवध हुनक एकटा हाथ अपन हाथ मे लैत छथि, मुदा ओ मुँह घुरौनहि रहैत छथि ।।
 सुनू देखू ने एम्हर... [कनियाँ धीरें-धीरें मुँह अपन पति दिसि घुरबैत छथि, मुदा सूड़ी निहुरा कए रहैत छथि] एतेक सुन्दर मुख त देखै देलहुँ, मुदा एहि मुख कें आइ सँ कोना बजायब... नाम त नहिये कहलहुँ अपन... [कनियाँ हाथ छोड़ा कए लिखलका कागज में सँ एकटा निकालि कए अवधक हाथ मे दैत छथि । अवध चकित भए कागज हुनक हाथ सँ लैत छथि आ' पढ़ै लगैत छथि—] “जेअहाँ नाम राखी, सैह नाम रहत सबदिन ।” । हँसैत । मुदा हमरा पास एतेक शब्द कतय अछि जे अहाँक नाम राखि सकी... । हमरा त उपमाक कोनो ज्ञाने नहि ताहि पर सँ हम बड़ दरिद्र छी । [सोचैत] ककरहु सँ सुनलहुँ—अहाँ साहित्यक छात्रा छलहुँ...अहीं कहू ने... एहि अनिन्द्य रूप क नाम की भ' सकैत अछि ?... [कनियाँ लजा कए कुर्सी पर सँ उठि कए खिड़कीक पास चलि जाइत छथि । अवधो पाछाँ-पाछाँ ओतय आबि जाइत छथि ।] की भेल कहलहुँ नहि, कोन नाम सँ बजायब अहाँ कें ? [कनियाँ तखन और एकटा कागज हुनक हाथ मे दए त्वरित गतियेँ एक बेर पतिक मुँह क दिसि देखैत मुँह घुरा लैत छथि । अवध पढ़ैत छथि—] ‘घरक लोग नाम रखने रहथि—इन्द्रमा !’ इन्द्रमा ! वाह... अपूर्व नाम !! कनियाँ कें पकड़ैत ओ हुनका खिड़की दिसि सँ घुरा कए अपना दिसि क' लैत छथि—] इन्द्रमा !...ओम्हर की देखैत छी...हमरा दिसि देखू ने ! [अपन आंगुर सँ कनियाँक अवनत मुख कें उठबैत छथि] अहाँक नाम त इन्द्रमा थिक । जानैत छी हमर नाम की थिक ? [इन्द्रमा स्वीकृति दैत छथि माथ डोला कए] कहू त... की थिक ? [ओ माथ डोलाबैत छथि] कियैक, ‘नहि’ कियैक ? ई त भेल गाम घरक नियम जे पतिक नामे नहि लेब... आ' हम त छी शहरी लोग । ओतय त सब अपन-अपन पतिकें नामे घ' कए बजबैत छथि । ओतय त अहूँ कें तहिना करैटा पड़त, नहि

त ओतहुका लोगसब त खूब चिढ़ाओत... वहू ने एकबेरि... अहाँक ओहि पातर मोलायम ठोर मे हमर नाम देखबा मे केहन लागत, से हम सोचियो नहि सकैत छी... एकबेरि... मात्र एकबेरि... प्लीज ! [मुदा इन्द्रमा साथ डोलाकए बारंबार अर्धावृत्तिक इंगित करैत छथि तखन हारि कए अवध कहैत छथि—] अच्छा ठीक अछि, तखन नहिये कहू । मुदा शहर मे त कहैये पड़त । ओतय त जेहन ने भीड़ रहैत अछि जे बहुत लोग हेरा जाइत अछि... साथ छुटि जाइत छैक चलैत-चलैत । अहिना जौ कहियो दुनू गोटेक चलैत-चलैत साथ छुटि जाय, त की करब ! तखन त हमरा नाम ध' कए शोर करैये पड़त, नहीं ? [इन्द्रमा साथ डोलबैत छथि] तैयहु नहि बाजब ? तखनहु नहि हाँक देब त हेराइये जायब ! आ से भेने त फेर कहियो नहि मिलि सकब हम दुनू... [ई सुनितहि इन्द्रमा मूड़ी खसा लैत छथि एवं हुनक आँखि सँ टपटप नोर चूबै लगैत छन्हि] ई की ? अहाँ त कानि रहल छी ? अहाँ की बुझलहुँ ज हम ई सघटा गप्प सचो कहि रहल छलहुँ... हम त मात्र मजाक... [इन्द्रमाक ह दुनू हाथे उठाए आँखिक नोर कें अपन हाथ सँ पोछैत] नहि इन्द्रमा... हम आ' अहाँ कहियो नहि अलग हैब... दुनियाक कोनो शक्ति अहाँकें हमरा सँ छीनि कए नहि ल' जा सकत... [ई कहैत ओ इन्द्रमा कें अपन छाती सँ लगबैत छथि । एतबहि मे बाहर सँ नारी कंठक हँसीक स्वर सुनल जाइत अछि । ई दुनू चौकैत पृथक भ' जाइत छथि । इन्द्रमा लजा कए पुनः घोंघ तानि लैत छथि । अवध किल्लु क्रुद्ध भए दरबजजाक दिसि देखैत छथि । तावत् नेपथ्य सँ गीत शुरू भ' जाइत अछि]

कंचन महल मानिक केर दिथरा चन्दन लागल केवाड़ हे
 बन बाँसक कोहबर ॥
 गज दन्तक सेज फूल के बिछौना रतन जतन के मिंगार हे
 बन बाँसक कोहबर ॥

ताहि कोहबर सुतय गेला राम दुलहा सीता दुलहिन संग साथ हे
 बन बाँसक कोहबर ॥
 कमलक मुख-मुख फेरन लागे सीता दुलहिन कर बाम हे
 बन बाँसक कोहबर ॥
 कमलक मुख-मुख फेरन लागे घुरि फिरि हृदय लगाव हे
 बन बाँसक कोहबर ॥

÷

÷

÷

÷

घुरि सुतू फिरि सुतू सुहबी से कनिया सुहबी तोरे धामे चादर मलीन हे
 बन बाँसक कोहबर ॥
 भीजै दिय' भीजै दिय' दुलहा से अवध दुलहा एहन सुख कतय पायब हे
 बन बाँसक कोहबर ॥

[जावत धरि गीत चलैत अछि, अवध एक बेरि खिड़की लग ठाढ़ इन्द्रमाक लग जाइत छथि आ' एक बेरि केवाड़ीक लग । ई गीत शेष हैबाक संगहि संग ओ बाहर जाइत छथि । संगहि संग हँसीक स्वर नेपथ्य सँ भासल अबैत अछि—स्त्रिगण सभक भागबाक शब्द स्पष्ट सुनल जाइछ । ओ पुनः प्रवेश कए इन्द्रमाक दिसि बढ़ैत छथि] कनिक जे चैन सँ अहाँ सँ गप्प करब, तकर उपाय नहि अछि । एक त गीतहारि बाँझू भैयाक आङ्गन बाली, माने वैह—डुमरवाली भौजी छलीहै... ताहि पर सँ जुटल छथि हमर छोटकी बहीन आ' और तीन-चारि गोटे... रहू ने, भोर होमै दियह त हम... । [अवध केँ एत्तेक क्रुद्ध देखि कए इन्द्रमा हँसि दैत छथि—नि शब्द रूपें ; हुनका आँचरि सँ मुँह नुकेबाक चेष्टा करैत देखि अहाँ हँसि रहल छी ? आ' ओसब... । एहि बेरि आबै दियन्हु ने त हमहुँ भौजी पर गीत गाबै लागब । [ई सुनिताहि इन्द्रमाक हँसी बढ़िये जाइत छन्हि ।] नहि त ओसब ओना नहि जैतीह ! [हँसैत-हँसैत एकटा कागज पर कि ने लिखि कए इन्द्रमा हुनका दिसि बढ़ा दैत छथि । अवध से ल' कए पढ़ै लगैत छथि । अपनहि मोने पढ़ैत छथि और ओहो हँसि

दैत छथि—] हँ, ठीके गीत चललहुँ । भौजीक बौकू भैया त एखन विदेश
मे छथिए... तै इयैह ठीक रहत—

प्रान पती परदेस गेल हे दुख दै गेल भारी

सासु हमर बड़ दुर्जन हे कहै नीपू ओसारी —

हे, ओहुना ई ठीके भेल अछि — बौकू भैयाक माय हिनका सत्ते खूब
खटबितो छन्हि... [हँसैत]

हम सुकुमारी कठिन अछि रे अहि तरहक भारी

नेहर मे बड़ सुख छल रे छलौं घूमै बजारे

केवल खायब काज छल रे आरो रचब सिंगारे

[अवध एतवा धरि पढ़िए कए हँसि दैत छथि ; इन्द्रमा संगहि हँसैत
छथि ।] हँ आव भेल । आव आवै ने दियन्हु हुनका लोकनि केँ ..
[कहैत दरबजाक पास जा कए ओ एकबेरि देवार मे कान सटा कए
किछु सुनबाक अभिनय करैत छथि । आ तकर बाद उठि कए कहैत
छथि —] बाह, आव डरबाक कोनो कारण नहि । ओ सब वयो नहि
छथि । भरिसक हमर माये डाँठने छथि । [इन्द्रमाक पास आवि कए
हुनका पलंग पर बैसाबैत कहैत छथि —] की ने कहैत छलहुँ अहाँ सँ कनेक
देर पहिने ? .. ? मोन नहि पड़ि रहल अछि । खैर, जाय दियह से सब
गण्य ! ई कहूँ—हम देखै मे बुद्धिक जकाँ त नहि ने लागैत छी एखन ?
[इन्द्रमा आश्चर्यित होइत छथि ।] अहाँ केँ आश्चर्य भ' रहल छै
मुदा शहर सँ ऐला सँ पूर्व हमर सबटा मित्र कहने रहथि—'बियाह करै
लेल जाय छह ? जा ! मुदा देखिह—चतुर्थीक राति मे अपन कनिया सँ
बुधियार जँका बात करिह... बेसी लोग बौक बनि जाइत अछि, नहि त
बेसी बाजै लगैत अछि' । कहूँ ने... हम तेहन नहि ने लगैत छी ? [इन्द्रमा
माथ डोला कए नकारैत छथि ।] हम अहाँकेँ पसिन्न छी ? [इन्द्रमा लजा
जाइत छथि—किछु नहि कहैत छथि ।] कहूँ ने... अच्छा, ठीक अछि,
किछु कहै नहि पड़त । हे ई देखू—हम [अपन रुमाल निकालि कए] एहि

रुमाल के हे एना क' कए धौलहुँ [शून्य मे खुलल रुमाल क एक कोना धरैत देखबैत छथि इन्द्रमा केँ] । जौ हम अहाँ केँ पसिन्न छी त ई रुमाल खसा दियह हमरा हाथ सँ । [इन्द्रमा पहिने त किछु ने कहैत छथि, ने करैत छथि । तकर बाद भुकि कए रुमाल ल' लैत छथि अवधक हाथ सँ । ओ भुक्तिहि अवध हुनका चुम्बन करबाक चेष्टा करैत छथि । मुदा इन्द्रमा अवधक रुमाल सँ अपन मुँह केँ भाँपि लैत छथि । अवध इन्द्रमाक माथ केँ अपन कन्हा पर रखैत हुनक केस पर हाथ फेरैत छथि किछु काल धरि । तकर बाद इन्द्रमा केँ धीरे-धीरे हँटा कए ठाढ़ भ' जाइत छथि और कहैत छथि -] जनैत छी इन्द्रमा... अहाँ हमरा पहिने भेटितहुँ... हमर जीवन मे पहिने अबितहुँ त हमर अतीत हमर वर्तमान सुहृत्तेँ सन सुन्दर हैतैक, मुदा, असल मे हमहीं तखन अपन विवाहक सब सँ प्रधान बाधा छलहुँ । [एतबाक सुनितहि इन्द्रमा सेहो ठाढ़ भ' जाइत छथि — सप्रश्न दृष्टिये । अवध इन्द्रमाक दिसि देखैत छथि] अहाँ भरिसक जानै चाहैत छी जे किद्यैक हम से कहि रहल छी । नहि ? [इन्द्रमा माथ डोला कए 'हँ' कहैत छथि ।] किशोर सँ जखन युवक भेलहुँ, देह मे यौवनक ज्वार आयल छल । ओहि ज्वार मे हमहुँ आन आन अनेक नाव जकाँ भसिया गेलहुँ । असावधान छलहुँ, तै । [नेपथ्य सँ एकटा कुमारीक गायन सुनल जाइछ । धीरे-धीरे तकर शब्द बढ़ैत अछि । आ पुनः कम भ' जाइत अछि ।] एहि मे हमर दोष त छल, मुदा सब सँ बेसी दोष छल हमर संगी सभक । वैह सब हमरा पापक रास्ता सँ पतनक पाताल धरि ल' गेल छल । [इन्द्रमाक दिसि देखैत । तखन हँ — एतबाक अहाँ कहि सकैत छी जे हमर सब सँ प्रधान अपराध छल ई जे हम एहन सब संगी जुटौने छलहुँ । [किछु काल ओ सूपचाप ठाढ़ रहैत छथि । तकर बाद आगाँ आबि कए आन दिसि मुँह घुरा कए ठाढ़ रहैत छथि । इन्द्रमा सामने आबि कए ठाढ़ होइत छथि । तखन अवध सचेतन भ' जाइत छथि ।] दिन मे त स्थिर रहैत छलहुँ । मुदा साँझ होइत देरी भीतर मे

जेना छटपटी लागि जाइत छल । [हँसैत एकरा 'रातिक रोग' कहि सकैत छी । रोज रातिक अंतिम पहर केँ घर घुरैत छलहुँ प्रायः बेहोस भ' कए । पीबितो खूब छलहुँ । [इन्द्रमाक दिमि देखैत] की डर भ' रहल अलि पीबाक बात सुनि कए ? [इन्द्रमा मृदु-मृदु हँसैत रहैत छथि, मुदा किछु कहैत नहि छथि ।] डरू नहि, एखन हम पीबैत नहि छी । हँसैत] ओ ओही दिन छोड़ि देने छलहुँ, जाहिदिन हमर 'रातिक रोग' हमरा छोड़ि देने छल । [चुप भ' कए पदचारण करैत छथि । तकर बाद जेना स्मृति मे डूबि गेल होथि, तेहन स्वर मे कहै लगलाह—] एकराति हम तेहने रोगक शिकार भ' कए शिकारक सन्धान मे बहिरायल छलहुँ । शहरक एक कुख्यात मुहल्ला मे नीक शिकार भेटल छलीह—साधारणतया ओहि-मुहल्ला सब मे एत्तेक सुन्दर निष्पाप मुँह भेटैत नहि छल । हम स्पष्ट बूझि रहल छलहुँ जे ओ ओहि पथ पर बेसीदिन पहिने नहि आयल छलीह । [एतबाक कहि कए अवध किछु काल चुप भ' जाइत छथि । इन्द्रमा अधीर आप्रह नेने हुनक पास आबि कए हुनका धीरे-धीरे छुबैत छथि, मुखभाव मे जिज्ञासा—] तकर बाद की भेल से सुनै चाहैत छी ? तकर बाद रोज राति जकाँ ओतय हम खूब पीलहुँ । एसगरे छलहुँ । कारण, हमर मित्र लोकनि हमरा कुपथ देखा धरि देने छलाह । ओहि पथ पर चलैत काल हम बाद मे आर ककरहु नहि लैत छलहुँ । [हँसैत] इच्छा कामना जे कहू, इयैह छल जे एहि पृथ्वी केँ हम एसगरे चीखब, एसगरे उपभोग करब—ताहि मे आर ककरहु अंश कियैक लेमै देब ? [चुप रहि कए] तँ ओतहु एसगरे गेल छलहुँ । नशा जखन खूब जमि उठल तखन हम बत्ती मिक्का कए ओहि निष्पाप असहाय देह केँ ल' कए आदिम खेल खेलै लागि गेलहुँ । एतबा मे बाहर सँ कयो केबाड़ पर धक्का देलक । हम तमसा गेलहुँ । मुदा सोचलहुँ—ई सब जगह मे त पुलिसक भ्रमेला होइते रहैत छैक । तँ, वैह सब हैत—किछु पाइ खर्च हैत... इयैह सब सोचैत हम ओकरा कहलहुँ केबाड़ खोलि कए देखै लेल । ओ केबाड़ खोलिये

कए किछु आश्चर्यित भ' कए ककरा सँ ने निम्न स्वर मे बात क रहल छल... कखनहु कखनहु डाँटियो रहल छल। हम मने मन गोसा रहल छलहुँ। सोचि रहल छलहुँ—जे कोन आफत आवि गेल अछि। उठि कए दरबज्जाक पास गेलहुँ त देखलहुँ ओ एकटा बन्चा केँ मारि रहल छल आ' ओ बन्चा बिना कोनो शब्द कैने कानि रहल छल। हम ओतय पहुँचि कए ओकरा सँ ओहि बन्चा दए पूछितहि ओ ओकरा भगा देमैं चाहैत छल। मुदा मारि खा कए ओ तखन पड़ल कनैत छल—जा नहि रहल छल। हमरा जे कहियो नहि होइत छल—सैह भेल ओहि बन्चा पर दया आवि गेल आ' हम ओकरा घरक भीतर ल' अनलहुँ। डटैत ओकरा सँ पूछल जे एना ओ कियैक कैलक। तकर बाद पता चलल ज ओ ओकरहि बेटा छल। आरो बहुत किछु पता चलल जकर बाद अपना पर घृणा भ' गेल छल। पता चलल जे ओकर पति मृत्युशय्या पर पड़ल छलैक। आ ओकर सन्तान सब पड़ल छल भूखल। घरक लक्ष्मी एम्हर अन्नसंधानक लेल रोज राति अपन देह केँ बन्ही रखैत छलीह हमरासब सन कामुक धनिक यथेच्छाचारी लोगक पास। [इन्द्रमा आश्चर्यित हैबाक अभिनय करैत छथि।] आश्चर्य भ रहल छी ? मुदा ई सत्य थिक। संसार मे अहिना होइत अछि। हमरा सबक आँखिक आग सँ जखन रंगीन पर्दा अपनहि हँटि जाइत अछि—तखन हमसब पर्दाक ओहि दिसि राखल दीर्घ ऐना मे अपना सबकेँ देखि कए चौँकि उठैत छी, सिहरि उठैत छी। अपन असल स्वरूपक पता तखनहि चलैत अछि। ओहि लक्ष्मीक पति कारखानाक एक मशीन तर दूनु हाथ क बलिदान देने छल। मुदा मालिक कोर्ट मे प्रमाण क' देने छलाह जे एहि मे ओकरे दोस छल। तँ ओकरा नहि भेटल कोनो क्षतिपूरण आ' ने भेल छलैक चिकित्सोक व्यवस्था। लक्ष्मीक भंडार मे जे किछु छलन्हि, से सबटा खर्च भ' गेल छलन्हि चिकित्से मे। मुदा आमदनी आब किछु नहि होइत छलन्हि। अंत मे दारिद्र्य आ भूख लोग केँ जे ने कराबै। गृहिणी गृह सँ बजार मे

विकै लेल पहुँचि गेल छलीह । जनैत छी ओ बच्चा की कहै लेल आयल छल ? ओ ओहि लक्ष्मीकें दूटा संवाद देमै आयल छल—एक—सब भाइ-बहीन कें खूब भूख लागल छलैक ; दूइ—परिवारक ऊपर सँ और एकटा बोझ उतरि गेल छल—“ओकरा सभक पिताक देहान्त भ’ गेल छलैक । [चुप रहैत छथि । नेपथ्य सँ एकटा नारी कंठक हकन्न कनबाक आवाज आबि रहल छल ।] ओ कानि रहल छलीह अपनहु ओकर बच्चा चुप भ’ कए ओकर मायक कानब देखि रहल छल, आ हम ? हम अनुतापक आगि मे जरि रहल छलहुँ । [चुप रहैत अपन आँखि मे आयल नोर कें पोछि लैत छथि ।] ताहि दिन सँ हम प्रायश्चित्त शुरू कैलहुँ और आइ अहाँकें पाबि कए हम अपना कें, अपन प्रायश्चित्त कें, ओहि दिन सँ शुरू भेल सुन्दरक लेल अपन आराधना कें सार्थक बूझैत छी । इन्द्रमा, अहाँ सबदिन हमरहि रहब ने ? ” हमरा पास— एत्तेक पास ? [कहैत इन्द्रमा कें अपना दिसि आकृष्ट करैत कथि । हमरा छोड़ि त नहि देब कहियो हमर आराधना क आधे पथ मे ? [इन्द्रमा साथ डोलबैत अपना कें समर्पण करैत छथि अवधक हृदय मे ।] इन्द्रमाक साथ पर हाथ फेरैत अवध कहैत छथि—] अहिना सब दिन अहाँकें— हमर घरक लक्ष्मी कें जौ हम अपन जिनगीक सन्दूक मे बन्द क’ कए राखि सकौ, त हम कहियो—[एतबा मे बाहरक दरबज्जा मे खटखट शब्द होइत अछि । आश्चर्यित भए दुनू पृथक भ’ जाइत छथि ।] के भ’ सकैत अछि एत्तेक राति कें ? भौजी आर त नहिये हैतीह एखन ।

अशोक—[नेपथ्य सँ पुनः दरबाजा पर कराघात करैत भैया ! भैया !!

अवध—[स्वगत] अवध ? एखन ?? की बात थिकैक ? [दरबाजा खोलैत]
की बात थिकैक अशोक ? की भेल अछि ?

अशोक—सर्वनाश भेल अछि भैया । [अशोक ई कहैत भीतर अवैत अछि ।]

अवध—मुदा भेल की अछि, से कहबह तखन ने !

अशोक—हमरा सबकेँ .. हमरा सबक सब किछु —सबटा इज्जति लूटि
लेलक ओसब***

अवध —[अधीर भ' कए] की भेल अछि से कहब ने !

अशोक —हमरा सबकेँ मकरन्दपुर बला सब खूब ठगि लेलक अछि***

अवध —मकरन्दपुर बला सब ? माने [परनीकेँ देखा कए] माने हिनक नैहरक
लोगसब***

अशोक —अहाँ एखनहुँ से बुकलहुँ नहि भैया जे ओसब केहन डाइन क हाथ
केँ अहाँक हाथ मे धरा देलक अछि ?

अवध —[गरजैत] अशोक ! की कहैत छह ? ई तोहर भौजी छथुन्ह ! हिनका
विषय मे एहन अपशब्द बजबा सँ पहिने

अशोक —अपशब्द ? एकरा अहाँ अपशब्द कहैत छी भैया ? और ओहि
सुन्दर मुखक अढ़ मे को अछि से जनैत नहि छी ?

अवध —थन्हह ! की भेल छन्हि हुनक मुख मे ? [एतबाक कहैत बात हैत हैत
घोघ केँ नमरा कए इन्द्रमा खिड़कीक पास जा' कए पाछाँ घुरि कए ठाढ़
भ' जाइत छथि ।]

अशोक —हँ--सैह पुछू भैया जे की नहि भेल अछि । अहाँ जनिका लक्ष्मी
बुझैत छियन्हि .. ओ .. हुनक मुँह मे भाषा नहि छन्हि*** ओ बौक
छथि

अवध —[अत्यन्त आश्चर्यित भए] की ?

अशोक —हँ भैया, हँ***एखनहि पता चलल ई बात । पूरन भैयाक सार
आयल छथि .. सैह कहने छथि .. ओहो मकरन्दपुरक लोगेपासक छथि ।
[अवध केँ चुप्प देखि] भैया ! चुप्प कियैक छी*** आबहु नहि बुझि रहल
छी जे कियैक एतेक धूमधाम आ' खर्च कैने छलाह ओसब ? बियाहक
दिन स्थिर करबा मे हड़बड़ी दए मोन नहि अछि ? किछु पढ़ि रहल अछि

मोन ? आव त हम सबटा बुझैत छी । हमहूँ सब नहि छोड़बन्हि । भोरे एहि डाइन के मकरन्दपुर भगैबाक सबटा बन्दोबस्त कैनहि छी... हुनका सबके नीक जँका बुझा देबाक चाहियन्हि जे हमरा सबके अपमान हजम करबाक आदति नहि अछि । हमहूँ सब बदला लेमै जनैत छी । काहिहये [एतबा मे जनैत जनैत इन्द्रमा थरथरबै लगैत छथि, हुनक घोघ उतरि जाइत छन्हि आ' ओ पाछाँ घुरि कए अवध दिसि देखैत और जनै लगैत छथि ।] बस-बस, बहुत भेल !... हम सबटा चालाकी बुझैत छी... ओ सब ढोंग-ढरनच और अभिनय एतय नहि चलत ।

अवध—[डंटाैत] अशोक !!! अपन जवान केँ रोकह... हमरा सामने हमर स्त्रीक विषय मे अभद्र जकाँ बात करबाक अधिकार तोरा के देलकह ?

अशोक—[आहत स्वर मे] भैया !!! ई अहाँ की कहैत छी ? ई... ई बौक छथि... हिनका बजबाक शक्ति नहि छन्हि... हिनका लेल अहाँ...

अवध—हँ-हँ... हिनका लेल हम दुनियाक सबटा वस्तुक उपेक्षा क' सकैत छियन्हि [निम्न स्वर मे] किछुओ छोड़ि सकैत छी हिनका लेल... [अवधक ई बात सुनितहि इन्द्रमा अश्रुपूर्ण नयनें हुनकहि दिसि देखैत छथि । अवध आगाँ बढ़ि कए इन्द्रमाक हाथ केँ अपना हाथ मे ल' कए कहैत छथि] ई त हमर लक्ष्मी छथि... हमर ध्रुव नक्षत्र... । [कहैत इन्द्रमाक नोर केँ पोंछि दैत छथि]

अशोक—तकर माने ? अहाँ हिनका नहि द' आवै देबन्हि...

अवध—[पाछाँ बिना घुरनहि] असम्भव ! ई हमर छथि आ' हमरहि रहतीह... जतय हम रहब ओतय ! । इन्द्रमा आनन्द सँ आलुत होइत अवधक हृदय पर माथ धरैत छथि ।] अशोक ! तों कहैत छह ओ बाजि नहि सकैत छथि । तों जनैत नहि छह अशोक... आइ राति भरि त वैह बजलीह... से भाषा तों नहि बुझबह...

अशोक — किन्तु ... ?

अवध — किन्तु कुछ नहि ! हमर जिनगी में 'किन्तुक' कोनो स्थान नहि अछि । और तौ जाह अशोक ... एहि चतुर्थीक राति में और ककगहु नहि चाहै छी ... आकास में एकटा चन्द्रमा केँ त देखिते छी, जाह सँ जरैत अछि भरिराति ... ओकरा जरै दहक ।

[अशोक प्रस्थानोद्यत होइत छथि आ' बत्ती मिझा जाइत अछि ।]

ओ कागज के बाघ छथि

पात्र-परिचय

- राजा — विशाल मुख; उन्नत ललाट; चलैत-फिरैत छथि कम्मे; देहो हिनकर विराटे छन्हि ।
- मंत्री — दुब्बर-पातर शरीर; आँखि मे धूर्त्ताक चेन्ह; सर्वदा तोत-राबैत छथि — मुदा स्टैटिस्टिक्सक वर्णन करैत काल नहि ।
- महेश राय — मैथिली रंगमंचक अभिनेता; गलाक स्वर गम्भीर; विनय सँ जतबाक झुकि सकैत छथि, क्रोध मे ततबहि 'उद्धत भ' सकैत छथि; आँखि मे चश्मा पहिरैत छथि ।
- ब्रह्मानन्द मिसर — रंगमंचक वाद्यनिर्देशक; नाटे छथि; मध्यवयस्क; मुख मे एकटा परिपुष्ट मोछ केँ छोड़ि 'आर किछु नजरि मे पड़ैबला नहि ; बाजैत काल हाथ मे हाथ धए घसब हिनकर बहुत दिनक आदति छन्हि ।
- विष्णु प्रभा — रंगमंचक अभिनेत्री ; सुन्दरी, दीर्घांगी; विशालाक्षी; हिनकर रूप केँ देखि कए सहजहि लोगक सत्यता आ इमान डोलि सकैत अछि ।
- घोषक — राजाक घोषक छथि — व्यक्तित्वहीन एक गोट मनुष्य ।
- नाट्य-आन्दोलनक समर्थकगण; अन्यान्य अभिनेता ।

व्यवस्थादि

मंचसज्जा क कोनो प्रयोजन नहि पड़त एहि पथ-नाटक वा 'स्ट्रीट-प्ले' मे । पथ, घर, बाहर कतहु ई खेलल जा' सकैत अछि ।

राजाक लेल जौ एकटा भोलंगा आ एकटा छोटेछीन मुकुट क व्यवस्था भ' सकैत नीक । राजा कुर्ता-पैजामे पर भोलंगा आ' मुकुट पहिरताह । से नहियो पहिरि कए ओ अभिनय क' सकैत छथि ।

आन-आन पात्रक लेल परिधानक कोनो रूप स्थिर-निश्चित करवाक प्रयोजन नहि अछि । तखन पुरुष पात्र सब धोती-कुर्ता अथवा कुर्ता-पाजामा पहिरथि त नीक । ई एकांकी व्यवस्था आ' तकर तानाशाही मनोवृत्तिक विरुद्ध लिखल गेल अछि । प्रयोजन पड़ला पर निदेशक और किछु मांग केँ एहि मे सम्मिलित क' सकैत छथि, किछु बदलियो सकैत छथि । कारण ई क्रिया-सचेतन नाटक थिकैक । नाटकक अभिनये धरि ई सन्तुष्ट नहि रहि नाटकक माध्यम सँ दर्शक केँ वक्तव्यक अनुरूप कार्य मे प्रेरित, उद्बुद्ध आ उत्साहित करवाक चेष्टा करैत अछि । एहि पथ-नाटकक सार्थकताक लेल चरित्रक अंगसज्जा आ आदति आदि सब किछु बदलबा मे निर्देशककेँ पूर्ण स्वाधीनता देब उचित बुझैत छी । एकर रचना भेल छल सरकार द्वारा नाट्याभिनय पर लगाओल गेल विशेष कर क प्रतिवाद-स्वरूप ।

ओ कागज केर बाघ छथि

घोषक — [एकटा टुटलका ढोल पिटैत घोल करैत छथि] सावधान-सावधान-सावधान !!! चारूकात, नहि-नहि, तीनोकात समुद्रक उन्मत्त प्रहरा सँ परिवेष्टित, हिमालयक उच्चता सँ संरक्षित, सुजला-सुफला-शस्यश्यामला एहि जम्बूद्वीपक अधीश्वर श्रीश्री श्रीयुक्त महामहिम श्री इन्द्रकान्त सिंह, एम० ए०, पी-एच० डी० (लंडन), एल-एल० डी० (वाशिंगटन), डी० एस-सी० (मास्को), रायबहादुर, भारतगौरव और और 'गरीब के भगावह' नारायण जन्मदाता पधारि रहल छथि

[एतबाक कहैत ढोल पीटब बन्द क' कए ओ अपन पीठ केँ आसन जकाँ बना कए मूड़ी गोटने बैस जाइत छथि । राजा आ' मंत्री प्रविष्ट होइत छथि । मंत्री राजाक अलखलला क प्रलंबित अंश केँ पाछा दिसि सँ धरैत अबैत छथि । राजा घोषकासन क पास आवि कए ठाढ़ होइत छथि ।]

मंत्री — महाराजक जय हो !

घोषक — [एक बेरिक लेल मूड़ी उठा कए] महाराजक जय हो !

राजा — [दू हाथ उठा कए आश्वासन देबाक अभिनय करैत छथि । राजाक एक हाथ मे छड़ी छन्हि । ओहि छड़ी केँ ओ घोषकक हाथक अंगुरिक मध्य स्थापित क' कए चारू कात देखै लगैत छथि । घोषक ओहि छड़ी केँ सोझ क' कए धेने रहैत छथि । तकर बाद राजा घोषकक पीठक आसन पर बैसैत छथि । मंत्री क इंगित करैत देरी ओ अपन ठेंगहुन पर बैसैत छथि ।] मंत्री !

मंत्री — महाराज !

राजा — आजुक सभा मे त अनेक विचार-प्रार्थी केँ देखैत छियन्हि । देश सँ की हमर आज्ञाक अनुसार सब गरीब केँ हटाओल नहि गेल अछि ?

मंत्री—से त कैल गेल अछि महाराज !! इयैह देखैत ने जाड—गत वर्षक परि-
संख्यान त कहैत अछि पथ-दुर्घटना मे दू हजार, खाद्य मे मिलावट सँ
तीन हजार, राजनीतिक गोलमालक नाम पर चारि हजार, गु'ड्डागर्दी क'
कए पाँच हजार, दाहीक सृष्टि कए पनरह हजार, अनावृष्टिक आवाहन क'
कए बीस हजार, अनाज केँ गुदाम मे लुका कए दाम बढ़ा कए पन्चीस
हजार, खुदरा दस हजार और समाजवादक मंत्र पढ़ि कए कत्तेको—
करोड़क करोड़ गरीब केँ हँटाओल गेल अछि । तैयहु ई जे सब टिकल
छथि, तनिको सबकेँ हँटैबाक प्रयास चलि रहल छन्हि ।

राजा—अहाँक बताओल हिसाब सुनि अत्यन्त प्रसन्न भेलहुँ । मुदा तखन
एत्तेक भीड़ कियैक ?

मंत्री—महाराज ! लोगक मांगक की आश्काहिह शेष छैक ? ई सब महासुख सँ
जिनगी बिता रहल छथि । किन्तु बंगदेश मे कहैत नहि छैक—सुखे थाकते
भूते किलोय यानी बेसी सुख सेहो उछन्नरियेक कारण । सैह पैर भेल
अछि । एकरा सब पर मांगक भूत सवार छैक ।

राजा—एखन हमरा की करबाक चाही ?

मंत्री—महाराज हिनका सभक मांग केँ सुनथिन्ह ।

राजा—मुदा, जानितहि छी जे बड़ कोमल अछि हमर हृदय, ललिते राग पर
गीत गबैत अछि हमर मन—जौँ हिनका सभक मांग सुनि कए हमरा दया
आबि जाइक... जौँ हम सबटा मानि ली—तखन ?

मंत्री—ताहि लेल निश्चिन्त रहल जाड । हम जा धरि छी, ता धरि कोनो
मांगक पूर्ति नहि हैत । हँ, हृदय मे बेसी दया आबैत आश्वासन द'
देल जैतैक ।

राजा—उत्तम । तखन बजाओल जाय हुनका लोकनिक नेता सब केँ ।

[कहैत राजा आसन पर सँ उठि कए पदचारणा करै लगैत छथि । घोषक
ठाढ़ भ' कए दुनू हाथ सँ मुँह केँ भाँपैत विचित्र स्वरे' चीत्कार करैत
छथि ।]

घोषक—मैथिली रंगमंचक नेता लोकनि : हाजि-इ-इ-इ-इ-र !!

[महेश राय आ' ब्रह्मानन्द मिसर प्राविष्ट होइत छथि एवं राजा केँ अभि-
वादन करैत ठाढ़ भ' जाइत छथि । घोषक पुनः पहिलुके जकाँ राजाक
आसन बनि जाइत छथि ।]

राजा—[अभिवादनक उत्तर मे हुनका टुनूक प्रति हाथ उठा कए पुनः पहिलुके
जकाँ पदचारणा करै लगैत छथि । किछु काल सब कयो चुप रहैत छथि ।
एक बेरि थम्हैत राजा कहैत छथि] कहू ! अहाँ लोकनि की चाहैत छी ?

महेश
ब्रह्मानन्द } —सुविचार, न्याय !!!

मंत्री—एतय विचार 'सु'ए होइत छैक । कथीक न्याय चाहैत छी—से कहल
जाव !!

महेश—महाराज ! मैथिली, रंगमंच और अन्यान्य विषय मे जे अन्याय भ'
रहल छैक—तकर हम सब न्याय चाहैत छी ।

राजा—अहू सब विषय मे अन्याय भ' रहल अछि ? से कोना ?

ब्रह्मानन्द—हमरा सभक भाषा क अनादर कैल जा रहल अछि—हमरा सभक
एतोक प्राचीन साहित्यिक और सांस्कृतिक इतिहास क उपेक्षा कैल जा
रहल अछि ।

महेश—हमरा सभक भाषा आ' संस्कृति क अपमान कैल जा रहल अछि
जखन कि एकर बजनिहार कम सँ कम अढ़ाई कोटि लोग छथि ।

ब्रह्मानन्द—मुदा जाहि भाषाक भाषी मात्र दस लाख, जाहि भाषाक इतिहास
मात्र दू-एक सय वर्षक—तकरो सब सँ एहन व्यवहार नहि कैल जा रहल
अछि ।

मंत्री—एहन कियैक कैल जा रहल अछि ?

महेश—हम त इयैह कहब जे हमसब कहियहु हिसाक पथ नहि धैलहुँ, कहियहु
देशक अर्थव्यवस्था पर आघात नहि कैलहुँ, हड़ताल, घेराव, तोड़-फोड़
करैत दृष्टि आकर्षित करबाक चेष्टा नहि कैलहुँ, तँ—

ब्रह्मानन्द—हमसब सरकार के सदा सहयोग दैत रहलहुँ ; पूर्ण विश्वास कैलहुँ, अपन मांगक लेल आन्दोलन नहि कैलहुँ—तै !

मंत्री—खामो-ओ-ओ-शू !!! बेअदब !

महेश—हमसब अपन मांग दय साफ-साफ बजलहुँ । कोनो अन्याय त नहि कैलहुँ ।

मंत्री—अन्याय नहि कैलहुँ ? एखनहि नहि कहलहुँ जे सरकार पर आब आस्था नहि अछि ?

ब्रह्मानन्द—कोना रहत आस्था ? महाराज जखन सिंहासन पर बैसल रहथि, तखनहि स्वाधीनता आ' सभक समान अधिकारक घोषणा कैने रहथि—आइ सँ तीस साल पहिनहि । मुदा, एखन धरि हमर भाषा आ' हमर प्रान्तक लेल ओ किछु नहि कैलन्हि ।

राजा—[मंत्री कठिन स्वरें किछु कहै चाहैत छलाह ; मुदा राजा हुनका हाथ उठा कए शान्त रहबाक इङ्गित करैत कहैत छथि । उत्तेजित जुनि होउ ! उत्तेजित हैबाक कोनो कारण नहि । अहाँसब कमेक सोचि-बिचारि कए देखू ! अहाँसब सँ बड़ जेसब भाषा प्रान्त अछि, ओसब अहाँसब सँ पहिने सम्मान आ' अनुदानक दावा क' सकैत अछि । क' सकैत अछि कि नहि ? तँ ओकरा सबकेँ सबसँ पहिने देखै पड़ल ।

महेश—बेस । मुदा हमरा सबसँ कम बजनिहार, कम प्राचीन आ' कम साहित्य रहितहुँ किछु भाषाकेँ कियैक स्वीकृति दैल गेल छैक ?

राजा—सैह त कहैत छलहुँ ! अहाँ सँ जे कयो बड़ अछि तकर सम्मान त पहिने हैवे करत । और अहाँ सँ छोट जे अछि... इयैय घ' लियह, अहाँक छोट-छोट भाइ बहिन सब—अहाँ कि ई नहि चाहव जे ओकरे सबकेँ आदर भेटैक सब सँ पहिने ? कहू—अपनहि कहू ! तँ ओहिसब भाषाक पुष्टिक लेल ओकरा सबकेँ स्वीकृति दैल गेल छैक । [स्वर केँ अधिकतर कोमल क' कए] कथी लेल ईसब झूठ-झमेला करैत छी... ? ...ताहि सँ लियह, ई लेमनचूस लियह... ! [राजा आपन दुनू पाकिट सँ दू टा

लेमनचूस निकालि कए महेश आ' ब्रह्मानन्दक हाथ मे धरा दैत छथि ।]

[महेश एक दू बेरि लेमनचूस केँ चोभैत छथि । हुनक मुखभाव बदलि जाइत छन्हि... ओ एहि लेमनचूस केँ मुँह सँ निकालि कए संदेहक दृष्टिये देखैत छथि । ब्रह्मानन्द महेशक हाथ सँ लेमनचूस छीनि लैत छथि ।]

ब्रह्मानन्द— [राजा आ' मंत्री नहि सुनथि तेना क' कए । ई की क' रहल छी ? ई ओ लोभ थिकैक जे मनुष्य केँ दुर्बल, अलस, आन्दोलन-विमुख क' दैत अछि । एहि सँ लोगक मनुष्यत्व हेरा जाइछ । हमरा सभक पूरा-पूरी मांग सुनावियौक । कहू त... आ ई सब... [कहैत दुनू लेमनचूस केँ दूर फेंकि दैत छथि ।]

महेश—[ब्रह्मानन्द सँ] ठीके कहलहुँ यौ ! [राजा सँ, उच्च स्वरें] महाराज !

राजा—[लेमनचूस चोभैत-चोभैत आश्चर्य-चकित भए] फेर की भेल ?

महेश—अहाँ जँ हमरा सभक लेल किछु करै नहि चाहौ, त हजारो टा बहाना बना सकैत छी—एतबा त एहि दीर्घ समय मे हमसब बुझिये गेल छी ।

मंत्री—सावधान, बेअदब ! राजाक संग प्रजा कत्तहु एना बाजय ?

राजा—आह, मंत्री ! अहाँ बात-बात पर एना ढराबियन्हु नहि हिनका लोकनि केँ । कहै ने दियन्हु हिनका सबकेँ जे किछु कहै चाहैत छथि । अरे, इयैह सब त हमर सिंहासनक पौआ छथि । पौआ केँ क्यो कखनहु काटि कए बाद द' सकैत अछि ?

मंत्री—[राजाक पास आवि कए निम्नस्वरें] जखन कोनो पौआ मे दीमक क बास होमै लागैत छैक तखनहि तकरा नहि काटि कए फेंकने मोसकिले होइत छैक, महाराज !

राजा—[निम्न स्वर मे] अहाँ चिन्ता जुनि करू मंत्री—हमहुँ राजनीति जनैत छी । [उच्चस्वरें] कहू—अहाँ सभक आर की मांग अछि ?

ब्रह्मानन्द—हमसब आइ अनेको वर्ष सँ नाट्यशास्त्रक चर्च, अध्ययन और तपस्या करैत अयलहुँ अछि ।

राजा—अति उत्तम काज कैलहुँ । देश एहि दिशा मे अहाँ लोकनिक प्रगतिक

लेल गर्व अनुभव करैत अछि ।

महेश—मुदा नाट्यशास्त्रक लेल एत्तेक श्रम, एत्तेक तपस्या भरिसक ठैयर्थ भ' जायत ।

राजा—कियैक ?

महेश—हमरा सबके' राष्ट्र सँ जे सहायता भेंटबाक चाही—से त भेंटते नहि अछि...

बृहानन्द—आ' ताहि पर सँ अहाँक राज्यक प्रशासक लोकनि एक सँ एक कर लगा रहल छथि । ...लगातार कर पर कर । मनोरजनक कर, पुलिस-व्यवस्था कर, आय कर, ई कर ओ कर ।

राजा—से की ?

बृहानन्द—अत्याचार बढ़ि रहल अछि हमरा सभक आश्रम पर । भरतक जत्तेक शिष्य एहि जम्बूद्वीप मे नाट्यशास्त्र-चर्चाक आश्रम खोलने रहथि, जत्तेक सहस्र नाट्य-प्रेमी एहि यज्ञ के' सार्थक बनैबाक लेल अपन जिनगीक दान देने छथि—से सबटा एहि प्रशासनिक आघात सँ रक्ताक्त... आहत, आ' व्याकुल भ' रहल छथि ।

महेश—जतय हमरा सबके' प्रोत्साहन भेंटबाक चाही, ततय भेंटि रहल अछि असम्मान, अविचार एवं आर्थिक दबाव ।

बृहानन्द—और एहि मे और बेसी मारल जा रहल अछि हमरासब सन छोट छीन संघ-आश्रम सब !

मंत्री—नाटक क लेल तपस्याक कोन प्रयोजन अछि ? नाटक माने त नकली राजा आ रानीक प्रेमकथा... दानवक अत्याचार... रानीक हरण... महायुद्ध... और अंत मे मिलन—मुदा सबटा नकलीए । त एहि लेल शास्त्र क कोन प्रयोजन आ' तपस्येक कोन आवश्यकता ?

महेश—से अहाँक बुद्धिक बाहरक गप थिक महामंत्री ! मंत्री हैबाक लेल अहाँके' राजाक तरबे टा चाटै पड़ल कि नहि—तपस्या त नहिये करै पड़ल !

मंत्री—की ? हमर एहन अपमान ? महाराज !!!

[एतबा मे घुंघरूक शब्द भासल अबैत अछि । पैर मे घुंघरू बान्हि कए विष्णुप्रभा धीरे-धीरे अबैत छथि । महाराजक संगहि संग सभक दृष्टि ओहि दिसि चलि जाइत छन्हि । महाराज स्पष्टतः लालची आ' लोभी भ' उठैत छथि विष्णुप्रभा के' देखि कए ।]

राजा—के छथि ई सुन्दरी ?

ब्रह्मानन्द—ई छथि विष्णुप्रभा... हमरा सभक तपस्याक एक शक्ति... हमरे सभक संग अभिनय करैत छथि — शास्त्राध्ययन सेहो करै छथि...

राजा—विष्णुप्रभा... वाह... जेहन सुन्नर नाम, तेहने .. । [मंत्री सँ] मंत्री ! आबो अहाँ कहब जे नाटकक लेल तपस्याक कोनो प्रयोजन नहि अछि—एहन तपस्विनी केँ देखियहु कए... ? [मंत्री राजाक अभिप्राय केँ बुझैत माथ झुका लैत छथि ।] हँ, अहाँसब कि ने कहैत छलहुँ आर्थिक दबाव दय ? ओ हँ, अहाँसभकेँ आर्थिक सहायता भेटबाक चाही—सैह ने ? ऐ' ? बेस-बेस ! अहाँ सभक प्रस्ताव पर हम विचार करब आ' भरिसक एहि विषय मे किछु ने किछु क' सकब से उमेद अछि—तँ कोनो दुश्चिन्ता नहि करू ।

महेश—
ब्रह्मानन्द } महाराजक जय हो !!!

मंत्री—महाराज अहाँसभक मांगक पूर्तिक विषय मे कोना की कैल जाय से अवश्य सोचताह ! मुदा... ताहि लेल... अहूँ सबकेँ...

महेश—मुदा की ? कहू हमरा सबकेँ की करै पड़त ?

ब्रह्मानन्द—हमसब किछु क' सकैत छी—

राजा—किछु नहि, किछु नहि—विशेष किछु नहि । बस, हमरा अहाँसभक विश्वास चाही, आनुगत्य चाही, प्रेम चाही... और बस, हमरा विष्णु-प्रभा केँ चाही...

महेश—हमरा सभक विश्वास, आदर्श, अनुगति, इज्जति—सभक प्रतीक

छथि विष्णुप्रभा...

ब्रह्मानन्द—हमसब अपन समस्त शिक्षा आ' ज्ञान विष्णुप्रभा केँ सौँपि देने छियन्हि ।

महेश— हमरा सभक नाट्यचर्चाक प्रेरणा छथि विष्णुप्रभा ।

ब्रह्मानन्द—हमसब अपन विश्वास, आनुगत्य आ' सम्मान अहाँकेँ उपहार द' रहल छी... मुदा तकर बदला मे अहाँ सँ सुविचार, न्याय आ उत्साहक आशा करैत छी ।

[ब्रह्मानन्द विष्णुप्रभाक हाथ ध' कए आगाँ बढ़ैत छथि । महेश राजाक हाथ ध' कए विष्णुप्रभाक दिसि बढ़ैत छथि । विष्णुप्रभाक हाथ राजाक हाथ मे देल जाइत छन्हि । घोषक ठाढ़ भ' कए छुल्ले दुनू हाथ केँ जोड़ि कए तीन बेरि शंखनाद करैत छथि । तकर बाद पुनः ढोल पीटै लगैत छथि । धीरे-धीरे ढोलकक शब्द मद्धिम भ' जाइत अछि । मंच सँ मंत्री, महेश, ब्रह्मानन्द आ' घोषक निष्क्रान्त भ' जाइत छथि । मात्र राजा आ' विष्णुप्रभा प्रस्तरिभूत भए ठाढ़ रहैत छथि—यावत् धरि ने मंच शून्य होइत अछि । मंच शून्य हैबाक पश्चात् पुनः वार्ता शुरू होइछ ।]

विष्णुप्रभा—हमसब एकत्र भेलहुँ—तकरहु त आव बहुत दिन बीति गेल अछि ।

राजा—से त ठीके !

विष्णुप्रभा—मुदा अहाँ आपन वचन नहि राखलहुँ एखन धरि !!

राजा—से कोना ?

विष्णुप्रभा—जे सब तपस्वी आपन भाषा—आपन मायक सम्मानक लेल प्राण-पात क' रहल छथि, जेसब न्यायशास्त्रक चर्चा, अध्ययन तथा प्रगतिक लेल तप क' रहल छथि—ओसब अहाँ पर बड़ भरोस क' कए हमरा उपहार देने रहथि ।

राजा—सत्ये !

विष्णुप्रभा—मुदा अहाँ हुनका सभक एहि विश्वास आ' आनुगत्यक योग्य किछु नहि कैलियन्हि ।

राजा—हमें ते हुनका सबके आश्वासन देने छियन्हि ।

विष्णुप्रभा—आश्वासने टा सँ लोगक पेट नहि भरैत छैक ।

राजा—देखैत छी राजाक सान्निध्य, रानीक सम्मान आ' राजसुख अहाँके कनेको बदलि नहि सकल अछि ।

विष्णुप्रभा—हम राजसुखक लेल नहि, आपन तपस्याक अंगक रूप मे अहाँक सेवा कैलहुँ अछि ।

राजा—नारीक जन्मे होइत छैक सेवा करबाक लेल ।

विष्णुप्रभा—और पुरुष ? जे अहाँक प्रजा छथि... ?

राजा—प्रजाक जन्म होइत अछि राजाक हुकुम केँ स्वीकार करबाक लेल... राजाक हाथ केँ संवकत करबाक लेल... देशक युद्ध मे वलिदान देबाक लेल... और प्रयोजन पड़ला पर राजकोष केँ समृद्ध करबाक लेल...

विष्णुप्रभा—और तकर बदला मे ओकरा भेंटतक अत्याचार, अराजकता, पराधीनता आ आर्थिक शोषण... नहि ?

राजा—खामोश !!! देखैत छी, अहाँक साहस दिनोदिन बढ़ले जा रहल अछि ?

विष्णुप्रभा—सुनू महाराज ! हम अहाँक सहधर्मिणी छी... सहयोगिनी छी... दासी नहि । और हम ई कहियहु नहि बिसरि सकैत छी जे हम कतय सँ आबि रहल छी...

राजा—[विष्णुप्रभा केँ धकेलि कए खसा दैत छथि नीचाँ] दूर भ' जाउ हमर सामने सँ... हम अहाँक मुखदर्शन धरि नहि करै चाहैत छी... हमरा लेल सबसँ प्रधान वस्तु थिक हमर शक्ति, हमर क्षमता... हमर सिंहासन...

विष्णुप्रभा—[ठाढ़ होइत] और हमरा लेल सबसँ प्रधान वस्तु थिक हमर देश, हमर देसकोसक लोग, हमर आन्दोलन... [कहैत तीव्रगतिसे मंच सँ निष्क्रान्त भ' जाइत छथि]

राजा—[क्रोध सँ काँपैत] मंत्री ! मंत्री !!!

मंत्री—[त्वरित गतिसे प्रविष्ट होइत] महाराज !

राजा—सुनू मंत्री... आइये घोषणा क' दियह समस्त देश मे जे सोत दिनक

भीतर जँ तपोवन सँ समस्त तपस्वी ज्ञानार्जनक ढोंग रचब छोड़ि अपन-
अपन घर नहि घुरथि, त समस्त तपोवनकें जरा कए भसम क' देल
जैतैक....

घोषक—[नेपथ्य मे घोषक ढोल पीटै लगैत छथि । राजा और मंत्री प्रस्तरिभूत
भ' जाइत छथि । घोषक घोषणा करैत छथि ।] सुनू, सुनू देशकोसक
लोग... आजुक बाद सँ अर्थशास्त्र, अनर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र,
अधर्मशास्त्र दुर्नीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र, समाजशास्त्र, गणितशास्त्र वा
अन्य शास्त्र—कोनो शास्त्रक अध्ययन-अध्यापन नहि है-ए-ए-ए-ए-एत !
और सुनू देशक लोगसब... आजुक बाद सँ नाट्यशास्त्रक रचना, अध्य-
यन और परिशीलन मे जोसब लागल रहताह— ओ सब राजरोषक आगि
मे झरकाओल जैताह । सात दिनक भीतर जँ ज्ञानक समस्त शृंखला नहि
टूटै, समस्त देश मे जँ विशृंखलाक जन्म नहि होइक, समस्त आन्दोलन
आ' धरना जँ टूटि कए छिन्न-विच्छिन्न नहि भ' जाय— त समस्त प्रजा
कें भीषण शास्ति सहै पड़तै-ए-ए-ए-ए-क ! [पुनः ढोल बजबैत ओ शान्त
होइत छथि ।]

[अकस्मात् दूर सँ कोलाहलक शब्द सुनल जाइत अछि । राजा आ' मंत्री
दुनू चौकैत छथि । लाठी हाथ मे नेने पाँच-दस गोठ लोग प्रविष्ट होइत
छथि । ओहि मे सबसँ आगा विष्णुप्रभा, महेश आ' ब्रह्मानन्द देखल
जाइत छथि । ओसब आबि कए राजाक सामने ठाढ़ भ' जाइत छथि ।
राजा आ' मंत्री दुनू भीत हैबाक अभिनय करैत छथि ।]

राजा—की बात थिकैक ?

मंत्री—फू-के च्-छी अहाँसब ?

महेश—हमसब सबदिन सँ महाराजक आज्ञाक पालन कैने अयलहुँ आ' सैह
आइयहु क' रहल...

राजा—ह-हमर आज्ञा ? ह-ह-हमर कोन आज्ञा ? हम त कोनो आज्ञा-ताज्ञा
नहि...

ब्रह्मानन्द—हमसब आव कोनो शास्त्रक अध्ययन, अर्जन आ' वद्धन मे प्राणदान नहि करै चाहैत छी ।

महेश—हमसब आव बुझि गेल छी जे अधिकार शक्तिये सँ अबैत छैक...
तकरा छीनि कए लेमै पड़ैत छैक...

ब्रह्मानन्द—हमसब अपन सबटा विश्वास, सम्मान आ' अधिकार देने छलहुँ
अहाँक हाथ में... [विष्णुप्रभा केँ पाछाँ सँ घीबि कए सामने आनि कए
ठाढ़ि कराबैत] हमसब विष्णुप्रभा केँ देने छलहुँ अहाँक हाथ मे .. मुदा
अहाँ तकर बदला मे देने छी अराजकताक आदेश...

विष्णुप्रभा—तँ आव एहि देश केँ अराजक बनैबाक शपथ नेने छी हमसब ।
आब एहि देश मे राजा क्यो नहि रहत...

महेश—[अन्यान्य संगी लोकनि सँ] मुँह की देखैत छहक ? ध्वंस करह एहन
अव्यवस्था केँ... शेष क' दहक एहि अत्याचारक जड़ि केँ...

विष्णुप्रभा—जकरा राजे करबाक योग्यता नहि, से कथीक राजा ?

ब्रह्मानन्द—मारह एहि दुःशासन केँ...

[एहीमध्य हिनका सभक प्रवेशक बादहि सँ अन्यान्य अभिनेतालोकनि
धीरे-धीरे राजा आ मंत्री केँ घेरि लैत छन्हि । राजा ओ मंत्री डरै एक
दोसरा केँ जकड़ि कए पड़ैबाक पथक सन्धान करैत छथि । महेश, ब्रह्मा-
नन्द आ' विष्णुप्रभा अपन अपन संलाप कहैत एक-एक डेग क' कए
राजा आ' मंत्रीक दिसि अगुआ अबैत छथि । और ब्रह्मानन्दक अंतिम
संलापक संगहि संग सब दिसि सँ दसो गोटे दसटा लाठी ल' कए सशब्द
राजा और मंत्री पर धरैत छथि आ' दर्शक हुनका दुनू केँ एक मुहूर्तक
लेल देखि नहि पवैत छथि । जखन अभिनेता लोकनि पुनः पछुआ कए
अपन-अपन जगह पर आबि जाइत छथि, तखन देखल जाइत अछि जे
राजा आ मंत्री चतुष्पद जीव जकाँ दर्शक वर्गक दिसि देखि रहल छथि ।
दुनूक मुँह पर कागजक बनायल बाघक मुखौटा शोभा दैत छन्हि । समस्त
अभिनेता एहि दृश्य क' देखि कए हँसै लागैत छथि । क्यो-क्यो कहै सेहो

लागैत छथि । आ' तकर बाद, महेश-ब्रह्मानन्द-विष्णुप्रभा क संग सब
क्यो समवेत स्वर से नारा लगवै लागैत छथि— ।

ई कागज केर बाघ छथि—

बाघ छथि, बाघ छथि

हिनका सँ नहि डरु अहाँ सब,

बिनु सुइया के ताग छथि ।

ई कागज केर बाघ छथि ॥

सुरा - सुन्दरी - कंचन चाही

जगह-जगह अभिनन्दन चाही

गुंडा - चोर, उचकका पोसथि

तैयो ई बे-दाग छथि

मानै क्यो नहि राजा-मन्त्री,

तैयहु धैने पाग छथि

गद्दी सँ ठेलू नीचा धए

ई नहि हुम्मार भाग छथि

हिनका सँ नहि डरु अहाँ सब

ई कागज केर बाघ छथि !